

नये नियम का इतिहास, साहित्य और धर्मशास्त्र

सत्र 7: मत्ती की पुस्तक में शिष्यत्व

डॉ. टेड हिल्डेब्रांट द्वारा

A. परिचय और एक शिष्य की समझ [00:00-3:03]

[A =संयुक्त लघु वीडियो: AC; 00:00-8:07] शिष्यों की समझ

आपका फिर से स्वागत है। हम आज फिर से मैथ्यू की पुस्तक पर काम करना शुरू करने जा रहे हैं। पिछली बार, हम मैथ्यू के बारे में बात कर रहे थे कि वह विधिवत है - ल्यूक द्वारा बिखरी हुई चीजों को इकट्ठा करना, प्रवचन लेना और मार्क के शब्दों को विस्फोटित करना, लेकिन फिर भी मार्क के वर्णित कार्यों को छोटा करना और छोटा करना। अब, आज हम जो करना चाहते हैं वह है - मैथ्यू के विधिवत होने के बाद, हम शिष्यत्व के संदर्भ में मैथ्यू के बारे में बात कर रहे थे। हमने इसे "प्रेरित" या शिष्यत्व कहा, और हमने एक नई धार्मिकता की धारणा के बारे में बात की थी कि यीशु उन आज्ञाओं को ले रहा था जिनके बारे में बात की गई थी और उन्हें इस तरह के मूल, नई धार्मिकता में दिल में डाल दिया था जिसके बारे में यीशु बात कर रहे थे। शास्त्रियों और फरीसियों की तरह नहीं, बल्कि दिल के मामलों की तरह। तो यह पहले हत्या का मामला था, अब यह क्रोध के संदर्भ में दिल का है। पहले यह व्यभिचार के संदर्भ में था, और अब यह आँखों की वासना के संदर्भ में है। और इसलिए यीशु व्यवस्था को लेते हैं, और उसे इस प्रकार की धार्मिकता के साथ हृदय में डालते हैं जैसा कि वे एक शिक्षक, दूसरे मूसा के रूप में कर रहे थे।

अब, आज मैं जो करना चाहता हूँ, वह है - सबसे पहले, हम प्रेरितों की समझ से शुरू करेंगे। जब आप इन अलग-अलग चीजों की तुलना करते हैं, दृष्टान्तों में और मार्क में भी समझ, तो यह बहुत दिलचस्प है। मैथ्यू अध्याय 13 में कहा गया है "स्वर्ग के राज्य के रहस्यों का ज्ञान तुम्हें, प्रेरितों को दिया गया है, लेकिन उन्हें नहीं।" इसलिए, मैथ्यू में उन्होंने प्रेरितों को ऐसे लोगों के रूप में चित्रित किया है जो समझते हैं: "समझ तुम्हें दी गई है, लेकिन उन्हें नहीं।" मार्क अध्याय 4, श्लोक 13 में, समानांतर मार्ग, "यीशु ने उनसे कहा, 'क्या तुम इस दृष्टान्त को नहीं समझते? फिर, तुम किसी भी

दृष्टांत को कैसे समझोगे?" और इसलिए यीशु ने मार्क की पुस्तक में उनकी समझ की कमी के लिए शिष्यों को फटकार लगाई, लेकिन मैथ्यू में उन्होंने कहा, "तुम्हें समझ दी गई है।" और इसलिए मार्क के शिष्यों के बीच अंतर दिलचस्प है, जिनके पास समझ नहीं थी, और मैथ्यू में, उनके पास समझ थी। यहाँ अगले भाग में भी ऐसी ही बात देखने को मिलती है: "क्या तुम इस दृष्टांत को नहीं समझते?" मार्क कहते हैं, "धन्य हैं तुम्हारी आँखें, क्योंकि वे देखती हैं और तुम्हारे कान, क्योंकि वे सुनते हैं। बहुत से भविष्यद्वक्ता चाहते थे, लेकिन वे वह नहीं देख पाए जो तुम देखते हो।" तो ये अंश मैथ्यू के साथ काम कर रहे हैं और मैथ्यू और मार्क को अलग कर रहे हैं।

B. मत्ती और मरकुस में समझ [3:03-5:40]

अब जो बात दिलचस्प है वह यह है कि जब आप नाव पर जाते हैं और पानी पर चलते हैं। मैं बस तुलना करता हूँ - और मैं जो कर रहा हूँ वह मैथ्यू और मार्क की तुलना करना है और यह दिखाना है कि मैथ्यू मार्क से कैसे अलग है और फिर कहता है, "हम्म, यह किसी तरह का विषय है।" मैथ्यू ने चीजों को मार्क के तरीके से अलग क्यों किया? तो जब वे नाव में आ रहे थे, याद रखें, यीशु पानी पर उनके पास चल रहे थे। मार्क में यह कहा गया है, "और वे बहुत चकित हुए, क्योंकि वे रोटियों के बारे में नहीं समझते थे, लेकिन उनके दिल कठोर हो गए थे।" और मैथ्यू में यह कहा गया है "और नाव में सवार लोगों ने उसे प्रणाम किया और कहा, 'सचमुच तू परमेश्वर का पुत्र है।'" तो जब यीशु एक नाव में चढ़ता है, तो यह कह रहा है कि वे वास्तव में सभी रोटियों और वहाँ क्या हो रहा था, इसे नहीं समझ पाए। मैथ्यू में यह कहा गया है, उन्होंने उसे परमेश्वर के पुत्र के रूप में पूजा। तो यह बहुत ही दिलचस्प है, फिर, दोनों के बीच यह तुलना।

वह खमीर के बारे में भी बात करता है। मैं वापस लौटता हूँ, हम फिर से नाव के दृश्य में हैं, वही कहानी मार्क में खमीर और नाव के साथ है, यीशु शिष्यों को निर्देश देते हुए कहते हैं, "क्या तुम अब तक नहीं समझे?" (मार्क 8:21)। लेकिन अगर आप मैथ्यू 16:12 पर जाएँ तो यह कहता है, फरीसियों के खमीर से सावधान रहने की चेतावनी देने के बाद, वह कहते हैं, "तब उन्होंने समझा कि उसने उन्हें रोटी के खमीर के खमीर से नहीं बल्कि फरीसियों और सद्दूकियों की शिक्षा से सावधान रहने को कहा था।" इसलिए मैथ्यू शिष्यों को समझदार के रूप में चित्रित करता है। मार्क

में, वह कहता है कि वे समझ नहीं पाए, और उन्हें यह समझाने की आवश्यकता है। इसलिए यहाँ शिष्यों को जिस तरह से चित्रित किया गया है वह दिलचस्प है। मार्क शिष्यों को न समझने के लिए डाँटता है। मैथ्यू उसे छोड़ देता है और इसके बजाय, यीशु निर्देश देता है, और इसलिए मैथ्यू की पुस्तक में यीशु को एक प्रभावी शिक्षक के रूप में चित्रित किया गया है। मुझे लगता है कि मैथ्यू यीशु को एक प्रभावशाली शिक्षक के रूप में चित्रित कर रहा है, और इसलिए उसके शिष्यों में समझ है क्योंकि मसीह एक प्रभावशाली शिक्षक है। इसलिए उसके शिष्य उसकी शिक्षा के कारण समझते हैं, जबकि मार्क विषय के उस निर्देशात्मक पहलू को इतना विकसित नहीं कर रहा है। और वह एक तरह का अग्रदूत दिखाता है, जहाँ मैथ्यू दिखाता है कि यीशु के निर्देश के बाद उन्हें समझ मिली होगी। इसलिए यह दिलचस्प है कि इस बिंदु पर दोनों किस तरह से अलग हो जाते हैं।

सी. समझ के इन मतभेदों को सुलझाना [5:40-8:07]

अब, आप इन्हें एक साथ कैसे जोड़ सकते हैं? पानी पर चलने की घटना जिसके बारे में हमने पहले बात की थी, उसमें कहा गया है, "जब वह नाव पर चढ़ा, तो वे पूरी तरह से चकित हो गए क्योंकि उन्होंने नहीं समझा था।" यहाँ मार्क 6:50 है, उन्होंने रोटियों के बारे में नहीं समझा था और उन्हें समझ नहीं आया। फिर भी मैथ्यू में यह कहा गया है, "तब नाव में सवार लोगों ने उसे प्रणाम किया और कहा, 'सचमुच तू परमेश्वर का पुत्र है।'" इसलिए मार्क में उन्हें यह समझ नहीं आया, फिर भी अगर आप मैथ्यू में देखें, तो उन्हें यह समझ में आ गया, और जब वह नाव पर चढ़ा, तो उन्होंने कहा, "तू परमेश्वर का पुत्र है।" तो बस इन दो बातों को इस समझ पर तुलना करें कि उन्होंने क्या समझा और क्या नहीं समझा। फरीसियों के खमीर की चेतावनी, हमने अभी इसका उल्लेख किया है। फरीसियों के खमीर के बारे में चेतावनी, फरीसी कहानी एक फटकार के साथ समाप्त होती है - "क्या तुम अभी भी नहीं समझे," और यह मार्क में है। जबकि, मत्ती 16 में, फरीसी के खमीर की चेतावनी के बाद यह कहा गया है, "तब उन्होंने समझ लिया कि उसने उन्हें रोटी के खमीर से नहीं बल्कि फरीसियों की शिक्षा से सावधान रहने को कहा था।" और इसलिए इन समानांतर परिच्छेदों के बीच तुलना करें जहां मत्ती यह दिखाता प्रतीत होता है कि शिष्य समझते हैं - मसीह एक प्रभावी शिक्षक हैं। मत्ती अधिक के पीछे जाता है - ऐसा नहीं है कि वे नहीं समझते थे - मत्ती इस

ओलिवोपिस्तोई के पीछे जाता है। अब, *ओलिवो*, आप में से कई लोग इतिहास का अध्ययन करते हैं, और इसलिए आप जानते हैं कि *ओलिवो* कुलीनतंत्र के समान है। कुलीनतंत्र क्या है? राजतंत्र क्या है? राजतंत्र एक का शासन होता है। कुलीनतंत्र कुछ या बहुतों का शासन होता है। कुलीनतंत्र - कुछ का शासन। तो यह कुछ है, *पिस्तोई* "विश्वास" है। इसलिए, यीशु ने मत्ती की पुस्तक लेकिन मैथ्यू ने शिष्यों को इस बात के लिए डांटा कि वे समझ नहीं पाए, बल्कि यह कि उनमें बहुत कम विश्वास था। मैथ्यू ने कई अंशों में इस बात का जिक्र किया: "और यीशु ने उनकी चर्चा को ध्यान में रखते हुए पूछा, 'हे अल्पविश्वासी, तुम आपस में क्यों रोटी न होने की बात कर रहे हो?'" तो, मार्क में ऐसा इसलिए था क्योंकि वे समझ नहीं पाए थे, लेकिन मैथ्यू में, यह कहा गया है, मूल रूप से, समस्या विश्वास की कमी थी। उनके पास समझ है और इस तरह का अंतर है। इसलिए दोनों की तुलना करना दिलचस्प है - मैथ्यू विश्वास के स्तर पर ध्यान केंद्रित करता है।

डी. शिष्यत्व की कीमत – डिट्रिच बोनहोफ़र [8:07- 11:29]

[बी = संयुक्त लघु वीडियो: डीएफ; 8:07-20:11]

शिष्यत्व की कीमत भाग 1

अब, हमने दिखाया है कि यीशु इस शिष्यत्व के साथ काम कर रहे हैं, कि उन्हें शिष्यत्व के एक पहलू के रूप में धार्मिकता की तलाश करनी है। हमने शिष्यों को दिखाया है कि वे समझते हैं कि यह कैसे इंगित करता है कि उनमें विश्वास की कमी है, लेकिन वे समझते हैं, और अब हम एक प्रमुख विषय पर आते हैं जिसे मैं शिष्यत्व की लागत कहना चाहता हूँ। और जैसे ही मैं उस वाक्यांश का उल्लेख करता हूँ, "शिष्यत्व की लागत," क्या दिमाग में आता है? खैर, आपके पास क्या है - हम में से अधिकांश जानते हैं कि डिट्रिच बोनहोफ़र नाम का एक आदमी था, और यह द्वितीय विश्व युद्ध के समय की बात है, और उसने *द कॉस्ट ऑफ़ डिसिपलशिप नामक एक पुस्तक लिखी थी* जो प्रकाशित हो चुकी है और अब कई लोगों ने पढ़ी है। और डिट्रिच बोनहोफ़र जर्मनी में थे जब 1930 के दशक में हिटलर का उदय हो रहा था, जब हिटलर का उदय हो रहा था, तब वह वास्तव में एक युवा व्यक्ति के रूप में धर्मशास्त्री थे, जब यह सब हो रहा था और उन्होंने देखा कि जर्मनी में क्या हो रहा था। वह वास्तव में अमेरिका आए और न्यूयॉर्क शहर में अध्ययन किया और वास्तव में वहाँ एक

अश्वेत चर्च में गए और वास्तव में "स्विंग लो, स्वीट चैरियट" और अश्वेत समुदाय की चीज़ों और उनके आध्यात्मिक और उनके विश्वास की अभिव्यक्ति से प्रेरित हुए। फिर वह जर्मनी वापस चले गए और फिर एक सेमिनरी शुरू करने पर काम किया। और सेमिनरी सरकार द्वारा अनुमोदित सेमिनरी नहीं थी। इसलिए उन्होंने कुछ समय के लिए इस सेमिनरी में पढ़ाया और अपने विचार विकसित किए - वे एक शांतिवादी थे। जैसे ही हिटलर का उदय हुआ, उन्होंने मूल रूप से सेमिनरी को बंद कर दिया, और इसलिए वह फिर से लंदन चले गए और फिर अमेरिका चले गए और यह अब था - मुझे लगता है कि यह 1940 का दशक था - और जब वह अमेरिका आए, हालांकि, इस बार, उन्हें एहसास हुआ कि जर्मनी में कुछ बुरा हो रहा था, और उन्हें एहसास हुआ कि अगर वह जर्मनी से भाग गए तो वह जर्मन लोगों से बात नहीं कर पाएंगे जब उनके लोग संघर्ष कर रहे थे। वह अमेरिका आए जहाँ वह एक बहुत ही शानदार जीवन जी सकते थे और अपना काम कर सकते थे, लेकिन वह वापस नाव पर चढ़ गए और वापस जर्मनी चले गए। वह यह जानते हुए भी इसमें शामिल हो गया कि उसे शायद मार दिया जाएगा, और वह और कुछ अन्य लोग तब एडोल्फ हिटलर की हत्या की साजिश रच रहे थे। यहाँ एक शांतिवादी है, जब उसे ऐसी वास्तविक बुराई का सामना करना पड़ता है, तो वह सामने आता है और कहता है "आप जानते हैं, अब सिर्फ दूसरा गाल आगे कर देना ही काफी नहीं है। हमें कुछ करना होगा। यह आदमी लोगों को मार रहा है और यह वाकई बहुत बुरा है और हमें कुछ करने की ज़रूरत है।" इसलिए, उसने एडोल्फ हिटलर की हत्या की साजिश रचनी शुरू कर दी। फिर उसे कैद कर लिया गया, और यह पता चला कि मित्र राष्ट्रों के आने और जर्मनी को आज़ाद करने से लगभग दो हफ़्ते पहले - आज़ादी से लगभग दो हफ़्ते पहले, उसे नंगा करके बाहर निकाला गया, और जर्मन जेल में लटका दिया गया। सिर्फ़ दो हफ़्ते - अगर वह बच जाता, लेकिन उसके जीवन के लिए यही प्रभु की इच्छा थी। शिष्यत्व की यही कीमत है। और जब डिट्रिच बोनहोफ़र शिष्यत्व की कीमत के बारे में लिखते और बात करते हैं, तो यह आदमी जानता है कि वह किस बारे में बात कर रहा है। उसने पीछे मुड़ने और वापस जाने का विकल्प चुना, यह जानते हुए कि इससे उसे अपनी जान गंवानी पड़ेगी। वह यीशु मसीह का सच्चा अनुयायी था।

ई. शिष्यत्व की कीमत – आज उत्पीड़न [11:29- 16:54]

इस युग में भी कई चीजें हैं, मैं अक्सर छात्रों से पूछता हूं, हम शुरुआती चर्च के बारे में पढ़ते हैं - फॉक्स की शहीदों की पुस्तक और अन्य चीजें कि कैसे शुरुआती चर्च में उत्पीड़न हुआ, खासकर पहली शताब्दी के बाद - पहली शताब्दी नहीं बल्कि दूसरी शताब्दी में जब आपके पास रोमन अधिकारी थे। पहली शताब्दी में, यह ज्यादातर स्थानीय उत्पीड़न था, लोग सम्राट और अन्य चीजों के प्रति अपनी वफादारी दिखाने की कोशिश कर रहे थे, लेकिन कई ईसाई मारे गए। 44 ईस्वी में जॉन के भाई जेम्स की हत्या कर दी गई। पीटर - रोम में उल्टा सूली पर चढ़ाया गया। पॉल, रोम में सिर काट दिया गया था। तो आपके पास कई ईसाई थे - पॉल, आपको प्रेरितों की पुस्तक की कहानियाँ याद हैं, पीटा जाना और उसके साथ सभी तरह की बुरी चीजें हुईं, पत्थर मारे गए, मरने के लिए छोड़ दिया गया, इस तरह की चीजें। और इसलिए मैं लोगों से पूछता हूं, "चर्च में उत्पीड़न का महान युग कब था? अब तक किसी भी अन्य शताब्दी की तुलना में अधिक शहीद कब मारे गए हैं? चर्च के दो हजार वर्षों में, वह कौन सी शताब्दी थी जो ईसाई शहीदों के लिए सबसे प्रसिद्ध थी?" और इसका उत्तर पहली या दूसरी शताब्दी नहीं है। इसका उत्तर बीसवीं शताब्दी है। बीसवीं शताब्दी में और अब इक्कीसवीं शताब्दी में जितने ईसाई मरे हैं, उतने तो चर्च की सभी शताब्दियों में नहीं मरे। और यह बहुत रोचक है। अभी हम नाइजीरिया को देख रहे हैं, और उत्तरी नाइजीरिया में कुछ मुस्लिम लोग हैं जो ईसाइयों को मार रहे हैं - अंदर जा रहे हैं, शहरों को नष्ट कर रहे हैं, चर्च जाने वाले लोगों को मार रहे हैं। हमें याद है, और मैंने बताया - यह कब हुआ था, एक साल पहले या दो साल पहले - इराक में जब ईसाई दो हजार सालों से इराक में थे। मेरा मतलब है, ईसा की मृत्यु के ठीक बाद चर्च वहाँ फैल गया, और ईसाई चर्च दो हजार सालों से इराक में है। हमने सत्ता संभाली और सद्दाम हुसैन को हराया, और अब ईसाई इराक में हैं, वे पूजा कर रहे हैं। बगदाद में, एक ईसाई चर्च में 68 लोग पूजा कर रहे हैं। वे सामने की ओर मुँह करके ईसाई चर्च सेवा में पूजा कर रहे हैं, और अचानक, एक इस्लामी आतंकवादी मशीन गन के साथ पीछे से आता है और 68 लोगों को मार देता है। पीठ में गोली मारता है, इन लोगों को मारता है - निर्दोष लोग, कोई हथियार नहीं, खुद को बचाने का कोई तरीका नहीं - उन्हें गोली मार दी जाती है। और फिर आप खुद से पूछते हैं, "यह मीडिया में कहां है? यह कहां था?" यह एक दिन की मीडिया स्टोरी थी और फिर गायब हो गई। मैंने अपनी कक्षा में भी पूछा, "क्या किसी ने इसके बारे में सुना?" और एक या दो लोग थे जिन्होंने इस

बारे में सुना भी कि क्या हुआ। बगदाद में एक पूजा सेवा में 68 ईसाइयों को पीठ में गोली मार दी गई - किसी को भी इसके बारे में पता नहीं है। वास्तव में मेरी कक्षा में, यह वास्तव में दिलचस्प था, एक व्यक्ति ने कहा, "मुझे आश्चर्य है कि उन्होंने ऐसा क्या किया जिसके लिए उन्हें यह सब सहना पड़ा।" मुझे खेद है, यह उल्टा है। आप इन लोगों को दोषी ठहरा रहे हैं - और इसलिए इन लोगों को गोली मार दी जाती है, असहाय रूप से इस तरह गोली मार दी जाती है। नाइजीरिया।

दक्षिणी सूडान और उस जैसी चीजों के बारे में क्या? मेरा मतलब है, मोअम्मर गद्दाफी, वह अब सत्ता से बाहर है, मोअम्मर गद्दाफी मर चुका है। लेकिन लीबिया - वह मुसलमानों को पैसे देकर नीचे जाकर ईसाइयों को मारने के लिए पैसे दे रहा था और अफ्रीका के उत्तरी हिस्से से। और फिर, ईसाई मर रहे हैं, ईसाई मर रहे हैं - दुनिया बस अपनी आँखें मूँद लेती है और चुप हो जाती है और इसके लिए बहाने बनाती है और कहती है, "ठीक है, यह तो बस एक पागल व्यक्ति था जिसने यह किया।" और आप कहते हैं, रुको, यह बार-बार हो रहा है। क्या हुआ? ओह, अरब वसंत, 2011 का अद्भुत अरब वसंत, और फिर आप सवाल पूछते हैं, मिस्र में अभी क्या हुआ? उन्होंने खुद को आज़ाद कर लिया, हाँ, मुबारक में मिस्र से आज़ादी और फिर अचानक आप कहते हैं, कॉप्टिक चर्च का क्या हुआ? कॉप्टिक चर्च मिस्र में दो हजार साल से है, और वे चर्चों को जला रहे हैं और ईसाइयों को मार रहे हैं, और इसे वे अरब वसंत की मुक्ति कहते हैं - स्वतंत्रता का यह महान काल और ईसाई मर रहे हैं और हर कोई इस बात की सराहना कर रहा है कि उन्हें आखिरकार लोकतंत्र मिल रहा है और लोकतंत्र ईसाइयों की मौत की ओर ले जा रहा है। फिर से, कौन कुछ कहता है? यह सब चुप है। कोई भी कुछ नहीं कहता। बहुत कम। और इसलिए, मैं जो कह रहा हूँ वह यह है कि शिष्यत्व की कीमत बहुत वास्तविक है, और जब मैं आपमें से कई युवा लोगों को देखता हूँ जो अब इस कक्षा में भाग ले रहे हैं, तो मेरा दिल टूट जाता है क्योंकि मेरा अनुमान है, आप ऐसे उत्पीड़न को देखने जा रहे हैं जैसा आपने पहले कभी नहीं देखा होगा। यहाँ चीजें तेजी से नहीं बढ़ रही हैं। नहीं, चीजें और अधिक उग्रवादी होती जा रही हैं। एक ईसाई के रूप में, आपको ईसाई धर्म के खिलाफ इन बड़े पैमाने पर आंदोलनों को देखने की बहुत संभावना है जहाँ लोग ईसाइयों को मार रहे हैं या इससे भी बदतर, कुछ अर्थों में, वे ईसाइयों को रोक रहे हैं ताकि ईसाई संदेश का प्रचार न हो सके।

और इसलिए जो होता है, वह यह है कि सरकारें कहती हैं, "ठीक है, आपको यह करने की अनुमति नहीं है, आपको एक ईसाई के रूप में ऐसा करने की अनुमति नहीं है।" इसलिए, यह कुछ ऐसा है जिसके बारे में हमें सोचने की ज़रूरत है - शिष्यत्व की कीमत। इसलिए मैं शिष्यत्व की कीमत की इस धारणा पर काम करना चाहता हूँ। आपको कोलंबिन शूटिंग में वह लड़की याद है और एक लड़का आया और अपनी कक्षा में बच्चों को मार रहा था, और उसने लड़की से पूछा, उसके सिर पर बंदूक रखी, और कहा, "क्या तुम ईसाई हो?" वह कहती है, "हाँ।" वह ट्रिगर खींचता है और उसके सिर में गोली मारता है और उसे मार देता है। हम कहते हैं कि यह कितनी शानदार गवाही है। आखिरी बात - "क्या तुम ईसाई हो?" वह कहती है "हाँ" और वह उसी समय मर जाती है। त्रासदी। त्रासदी। यह अमेरिका के कोलोराडो में हुआ था।

F. शिष्यत्व की कीमत—शांति नहीं, बल्कि तलवार [16:54-20:11]

तो, शिष्यत्व की कीमत। मुझे यीशु की कुछ टिप्पणियाँ पढ़ने दीजिए। यह अध्याय 10 से है जब यीशु बारह को भेज रहे हैं - वे अपने बारह शिष्यों को भेज रहे हैं - और वे बारह शिष्यों को चेतावनी दे रहे हैं कि जब वे बाहर जाएँगे तो क्या होगा और वे यह कहते हैं: "क्योंकि मैं मनुष्य को उसके पिता के विरुद्ध, और बेटी को उसकी माँ के विरुद्ध करने आया हूँ; मनुष्य के शत्रु उसके अपने घराने के सदस्य होंगे, और जो कोई अपने पिता या माता को मुझसे अधिक प्यार करता है, वह मेरे योग्य नहीं है। और जो कोई अपना क्रूस नहीं उठाता और मेरे पीछे नहीं चलता, वह मेरे योग्य नहीं है।" मुझे लगता है कि वास्तव में अन्य सुसमाचारों में से एक से एक और अंश यह कहता है: "यीशु कहते हैं (और यह एक दिलचस्प अंश भी है) "मैं शांति लाने नहीं आया, बल्कि तलवार लाने आया हूँ।" यह यीशु मसीह बोल रहे हैं। वे कहते हैं, "मैं शांति लाने नहीं आया, बल्कि तलवार लाने आया हूँ।" और इसलिए आप पूछते हैं, "क्या ईसाई धर्म तलवार का धर्म है?" और आप कहते हैं, "ठीक है, हाँ। यीशु सिखाते हैं, 'मैं शांति लाने नहीं आया, बल्कि तलवार लाने आया हूँ' और इसलिए लोग कहते हैं, 'देखो, ईसाई धर्म भी एक हिंसक धर्म है!' गलत। आपको वहाँ संदर्भ देखना होगा। संदर्भ क्या है? वह अपने शिष्यों को तलवार उठाने के लिए नहीं कह रहे हैं। जब पतरस तलवार उठाता है और गेथसेमेन के बगीचे में मलखुस का कान काट देता है, तो यीशु कहते हैं,

"अपनी तलवार रख लो; जो तलवार से जीते हैं, वे तलवार से मरते हैं।" यीशु कहते हैं, "मैं शांति लाने नहीं आया, बल्कि तलवार लाने आया हूँ।" उसका मतलब यह है कि "हे शिष्यों, जब तुम बाहर जाओगे, तो तलवार का इस्तेमाल तुम पर किया जाएगा।" और यीशु कहते हैं कि यहाँ जो हो रहा है, वह शांति नहीं ला रहा है, बल्कि तलवार का इस्तेमाल तुम पर किया जाएगा। यह उन्हें तलवार उठाने के लिए नहीं बुला रहा है, वह बस उन्हें चेतावनी दे रहा है कि तलवार - वह मृत्यु - किसकी नियति बनने जा रही है? प्रेरितों की। जॉन को छोड़कर सभी शहीद हो गए - हमें आश्चर्य है कि वहाँ क्या हुआ। और पॉल के बारे में भी हम जानते हैं। तो, शिष्यत्व की कीमत, शिष्यत्व का मुद्दा।

मेरे लिए यह एक दिलचस्प बात है, शिष्यों के साथ, आपको उनमें से सभी बारह मिल गए हैं - यहूदा ने यीशु को धोखा देने से बचने के लिए खुद को फांसी पर लटका लिया। पॉल रोम में शहीद के रूप में मर जाएगा, उसका सिर काट दिया जाएगा। पीटर को उल्टा सूली पर चढ़ाया जाएगा क्योंकि पीटर खुद को यीशु की तरह मरने के योग्य नहीं समझता। तो क्या दिलचस्प है, कि सभी बारह प्रेरित मूल रूप से शहादत से मरते हैं। जॉन, जॉन के साथ क्या हुआ, इस पर कुछ सवाल है क्योंकि वह 90 के दशक तक जीवित रहा, लेकिन मूल रूप से वे सभी शहादत से मरते हैं। आप कहते हैं, "यह मुझे ईसाई धर्म के बारे में कुछ बताता है," क्योंकि, मसीह के मृतकों में से जी उठने से पहले, ये सभी लोग डरे हुए और छुपते हुए भाग रहे थे, और अब पुनरुत्थान के बाद, आप उनके जीवन में ईश्वर की शक्ति देखते हैं। और यह ईसाई धर्म की सत्यता का एक दिलचस्प प्रमाण है। ये लोग मर गए - उन्होंने यीशु के बारे में किंवदंतियाँ नहीं बनाई - ये लोग अपने विश्वास के लिए मर गए। वे अपने विश्वासों के लिए मर गए। जब आप उन सभी बारह लोगों को मरते हुए देखते हैं, तो आप उम्मीद करते हैं कि, अगर वे यीशु के बारे में मिथक और किंवदंतियाँ बना रहे थे, तो उनमें से कोई कहेगा, "अरे, हमने यह सब बनाया है। यह ठीक है, आपको मुझे मारने की ज़रूरत नहीं है क्योंकि यह सब सिर्फ़ मनगढ़ंत था।" नहीं, नहीं, नहीं। वे सभी यीशु मसीह के मृतकों में से जी उठने की घोषणा करते हुए अपनी मृत्यु को प्राप्त हुए।

जी. लागत – आसक्ति का त्याग [20:11-23:56]

[C = संयुक्त लघु वीडियो: GH; 20:11-27:13]

शिष्यत्व की कीमत भाग 2

तो, ठीक है, यहाँ शिष्यत्व की कीमत। आइए इसके बारे में थोड़ा और बात करें। आपको अमीर युवा शासक का मामला समझ में आता है। आइए नीचे देखें और देखें, हमने डिट्रिच बोनहोफ़र के बारे में बात की है और सच्चे शिष्यों को अस्वीकृति, उत्पीड़न, घृणा - शांति नहीं, बल्कि तलवार का सामना करना पड़ेगा। और इसलिए, यही वह है जिसके बारे में हम अभी बात कर रहे थे। फिर आपके पास है "क्योंकि मैं एक आदमी को उसके पिता के खिलाफ या बेटी को उसकी माँ के खिलाफ करने आया हूँ; एक आदमी के दुश्मन उसके अपने घर के सदस्य होंगे, और जो कोई भी अपनी माँ या पिता को मुझसे अधिक प्यार करता है वह मेरे योग्य नहीं है। और जो कोई भी अपना क्रूस नहीं उठाता है ... " और किसी के क्रूस को उठाने की छवि - हम इसे आज एक धार्मिक चीज़ के रूप में देखते हैं, लेकिन क्रूस मृत्यु का एक क्रूर साधन था, "... और मेरा अनुसरण करना मेरे योग्य नहीं है। और जो कोई भी अपना जीवन पाता है वह इसे खो देगा। जो कोई भी मेरे लिए अपना जीवन खो देता है वह इसे पा लेगा।"

अब, यहाँ त्याग करना आसक्ति को छोड़ने या त्यागने से शिष्यत्व की कीमत है। तो आपके पास मैथ्यू की पुस्तक में अमीर युवा शासक की यह कहानी है और मैं बस इसे पढ़ना चाहता हूँ। अमीर युवा शासक यीशु के पास आता है और कहता है, "अनंत जीवन पाने के लिए मुझे कौन से अच्छे काम करने चाहिए?" तो, वह आदमी आता है और सीधे यीशु से सवाल करता है - "अनंत जीवन पाने के लिए मुझे क्या करना चाहिए?" - आप उम्मीद करेंगे कि यीशु कहेंगे, "मसीहा पर विश्वास करो। मुझ पर विश्वास करो और तुम्हें अनंत जीवन मिलेगा।" यह वह नहीं है जो यीशु इस युवक से कहते हैं। बहुत दिलचस्प है। वह कहते हैं, "हत्या मत करो। व्यभिचार मत करो। अन्य चीजें मत चुराओ।" युवक ने इसका जवाब दिया: "मैंने इन सभी का पालन किया है। मुझे अब भी क्या कमी है?" यह कहता है - मुझे लगता है कि यह मार्क की पुस्तक में है - कि यीशु ने इस युवक को देखा जिसने स्पष्ट रूप से व्यवस्था का पालन किया था, और यीशु ने उससे प्यार किया। फिर

भी, यीशु उसे अगले कदम पर धकेलते हैं, और वे कहते हैं, "यदि तुम परिपूर्ण होना चाहते हो, तो जाओ अपनी संपत्ति बेचो और गरीबों को दे दो और तुम्हें स्वर्ग में खजाना मिलेगा। फिर आओ और मेरे पीछे चलो।" वह दुखी होकर चला गया क्योंकि उसके पास बहुत धन था। फिर यीशु ने टिप्पणी की, "एक अमीर आदमी के लिए स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करना कठिन है।" एक अमीर आदमी के लिए स्वर्ग में, राज्य में प्रवेश करने की तुलना में एक ऊँट के लिए सुई के छेद से गुजरना आसान है। तो, आपको यहाँ यह कथन मिलता है कि अमीर युवा शासक अपने धन के प्रति आसक्ति को नहीं छोड़ पा रहा है, और यीशु ने कहा, "इसे छोड़ दो, गरीबों को दे दो। आओ और मेरे पीछे चलो।" तो, शिष्य इससे भ्रमित हो गए। वे कहते हैं, "तो फिर, कौन बचाया जा सकता है?" "एक अमीर आदमी के लिए राज्य में प्रवेश करना ऊँट के लिए सुई के छेद से गुजरने से ज़्यादा कठिन है।"

अब, वैसे, मैं सुई की आँख को सुई की वास्तविक आँख मानता हूँ। हर कोई हमेशा कहता है, "ठीक है, यह एक द्वार था जिससे ऊँट को सारा माल निकालने के लिए गुजरना पड़ता था।" मुझे नहीं पता, यह बात मुझे कभी समझ में नहीं आई। मुझे लगता है, वास्तव में, वह सुई के बारे में बात कर रहा है और बस यह महान विरोधाभास दिखा रहा है। वह यह कहने की कोशिश कर रहा है कि यह असंभव है - ईश्वर के बिना - एक अमीर आदमी के लिए यह असंभव है। लेकिन, वैसे, हम जानते हैं कि शुरुआती चर्च में ऐसे अमीर लोग थे जिन्होंने मसीह को स्वीकार किया था। हमारे पास अरिमथिया का यूसुफ है; आपके पास निकोडेमस और अन्य हैं जो धनवान लोग प्रतीत होते हैं जिन्होंने यीशु का समर्थन किया; हमारे पास प्रेरितों की पुस्तक में लिडिया है, - लिडिया, बैंगनी रंग की विक्रेता; और अन्य, इसलिए यह धन-विरोधी बात नहीं है। यह सिर्फ यह कह रहा है कि इस धन ने स्पष्ट रूप से इस युवक को अपने पंजे में जकड़ लिया था और यीशु को ठीक से पता था कि यह कहाँ है।

एच. लागत – स्वयं को नकारना/खोना [23:56-27:13]

अब, मसीह के लिए अपने आप को खोना और खुद को खोना शिष्यत्व की कीमत का एक और पहलू है। और इसलिए, यह यहाँ मसीह के अनुकरण पर एक अंश में आता है, और मुझे बस इस अंश को पढ़ने दें। यह अध्याय 16, श्लोक 24 से 26 तक है। यह कहता है: "तब यीशु ने अपने

शिष्यों से कहा, 'यदि कोई मेरे पीछे आना चाहे, तो उसे अपने आप से इन्कार करना होगा और अपना क्रूस उठाकर मेरे पीछे आना होगा। क्योंकि जो कोई अपना प्राण बचाना चाहेगा, वह उसे खोएगा; और जो कोई मेरे लिए अपना प्राण खोएगा, वह उसे पाएगा। यदि कोई मनुष्य सारी दुनिया को प्राप्त कर ले, परन्तु अपनी आत्मा खो दे, तो उसे क्या लाभ होगा? और मनुष्य अपनी आत्मा के बदले में क्या दे सकता है?' तो यहाँ यीशु, ईसाई धर्म के लिए बलिदान के बारे में बात करते हैं। कभी-कभी मैं अमेरिका में देखी जाने वाली सांस्कृतिक ईसाई धर्म के बारे में सोचता हूँ, जहाँ लोग कहते हैं, "यदि आप यीशु का अनुसरण करते हैं तो आपको एक शानदार जीवन मिलेगा। आपके पास एक तरह का उद्देश्यपूर्ण जीवन होगा - आपके पास जीवन में एक उद्देश्य होगा और सब कुछ ठीक चलेगा। भगवान आपके चेहरे पर एक बड़ी मुस्कान बिखेरेंगे और आप हर समय खुश रहेंगे।" और आप कहते हैं, "एक मिनट रुकिए, हम यहाँ क्रूस के बारे में बात कर रहे हैं। हम सुसमाचार के लिए दुख उठाने और अपना जीवन खोने के बारे में बात कर रहे हैं।" तो, यह दिलचस्प है कि मुझे कैसे लगता है कि चीजें इस "स्वास्थ्य और धन" प्रकार के सुसमाचार की ओर अधिक स्थानांतरित हो गई हैं: यीशु का अनुसरण करें और वह आपका जीवन बना देगा - सब कुछ बेहतर काम करेगा। और इसका उत्तर है - कुछ गहरे अर्थों में - इसका उत्तर है हाँ, जीवन में उद्देश्य और अर्थ की भावना और उद्देश्यपूर्ण जीवन की भावना अधिक है, लेकिन एक और अर्थ है जिसमें बहुत बड़ा नुकसान और बहुत बड़ी पीड़ा हो सकती है ईसाई लोग यीशु के नक्शेकदम पर चलते हैं। हमें यीशु के कदमों पर चलना है, और यीशु का मार्ग दुःख का मार्ग है। यीशु एक "दुःखी व्यक्ति है और दुःख से परिचित है।" आप उसे तब तक नहीं देख सकते, जब तक आप ईसाई किताबों की दुकानों या किसी अन्य जगह पर हंसते हुए यीशु के रूप में न हों। आप यीशु को क्या देखते हैं? यरूशलेम पर रोते हुए, आप यीशु को पीड़ित होते हुए देखते हैं, और यही वह मार्ग है जिस पर हमें बुलाया गया है। तो यह खुश नहीं है - हर समय खुश रहने वाले यीशु की तरह जो हमारी संस्कृति में चित्रित किया गया है। मसीह की यह नकल - हमारे पास थॉमस ए केम्पिस द्वारा लिखी गई एक पुस्तक भी है जिसका नाम है *द इमिटेशन ऑफ क्राइस्ट* - और इसलिए जो लोग मसीह का अनुसरण करेंगे वे उनका अनुकरण करेंगे और वे उनके कदमों पर चलेंगे, और उनके कदम क्रूस का रास्ता हैं, दूसरों के लिए अपना जीवन खोना। और इसलिए यह एक कठिन संदेश है। शिष्यत्व की कीमत है। यह रहा है - और यीशु

का अनुसरण करने वाले शिष्यों ने अपने जीवन, अपने परिवार और सभी प्रकार की चीजों के साथ बड़ी कीमत चुकाई है। इसलिए जो कोई भी मसीह का अनुसरण करता है, वह उन प्रकार की चीजों को जानता होगा। "अब, अगर कोई मेरे पीछे आना चाहता है, तो उसे खुद को नकारना होगा और अपना क्रूस उठाना होगा और मेरे पीछे आना होगा।" हम मसीह का अनुकरण करते हैं। हम उनके पदचिन्हों पर चलते हैं। जैसे वह क्रूस पर चढ़ते हैं, वैसे ही हम भी चलते हैं।

I. सच्चे और झूठे शिष्य [27:13-32:18]

[D = संयुक्त लघु वीडियो: IK; 20:11-39:46]

टी/एफ शिष्यत्व, क्या मैं एक ईसाई हूँ?

अब, यहाँ एक और मुद्दा है - शिष्यत्व की कीमत। हमने सच्ची धार्मिकता के बारे में बात की है; हमने समझ के बारे में बात की है, कि हमें अपने शिक्षक को समझने की ज़रूरत है; और अब हमने शिष्यत्व की कीमत के बारे में बात की है। अब मैं सच्चे और झूठे भविष्यद्वक्ताओं या सच्चे और झूठे शिष्यों के इस विषय पर विचार करना चाहता हूँ। जाहिर है कि सच्चे और झूठे शिष्य हैं। और इसलिए, मैथ्यू झूठे प्रेरितों और शिष्यों के बारे में क्या सिखाता है? हम इस बारे में बात कर रहे हैं कि मसीह का शिष्य होने का क्या मतलब है, और जाहिर है, सच्चे और झूठे शिष्य हैं। मैथ्यू इसे बहुत मार्मिक तरीके से सामने लाता है। और इसलिए, हम खरपतवार के दृष्टांत के बारे में बात कर सकते हैं जहाँ क्या है? एक किसान बाहर जाता है और अपनी ज़मीन में अच्छा गोहूँ बोता है। जब वह सो रहा होता है, तो दुश्मन आता है और बगीचे में खरपतवार बोता है। क्या होता है कि यह ऊपर आता है, नौकर देखते हैं कि अब गोहूँ के साथ खरपतवार भी मिल गए हैं, और वे कहते हैं, "क्या हमें खरपतवार निकाल देना चाहिए?" और मालिक कहता है, "नहीं, गोहूँ और जंगली घास को कटनी तक साथ-साथ रहने दो," और कटनी के समय, वह अपने कटाई करने वालों को भेजेगा और उसके कटाई करने वाले गोहूँ को जंगली घास से अलग कर देंगे, और वह जंगली घास को कभी न बुझने वाली आग से जला देगा - जाहिर है कि यह किसी नकारात्मक बात का प्रतीक है - लेकिन जंगली घास जल जाती है। लेकिन वे साथ-साथ उगते हैं, गोहूँ और जंगली घास एक साथ उगते हैं। गोहूँ उगता है और लगभग साठ, सौ बालें अनाज की फसल पैदा करता है। जंगली घास कुछ भी पैदा

नहीं करती, और इसलिए वे जल जाती हैं। तो, यह दृष्टांत है कि ईसाई चर्च में एक मिश्रण है। आपको लगता है कि हर कोई ईसाई है और इसका उत्तर है नहीं, एक मिश्रण है। यीशु इस दृष्टांत में हमें इसके बारे में चेतावनी देते हैं। विश्वास या कार्य? यह बड़ा सवाल है जो सामने आता है - विश्वास या कार्य?

अब, मैं चाहता हूँ कि आप इस पर गौर करें, यीशु का यह कथन और यह मैथ्यू अध्याय 7 से है। यह पहाड़ी उपदेश है। यह यीशु की मुख्य शिक्षा है - पहाड़ी उपदेश। और यही वह कहता है, और मुझे लगता है कि यह कुछ मायनों में छंदों का एक भयानक सेट है। अब, मुझे पता है कि हमें किसी भी चीज़ से डरना नहीं चाहिए, हमें हर समय खुश रहने की ज़रूरत है क्योंकि यीशु ने हमारी आत्मा को बचाया है और अब हमारे पास अग्नि बीमा है। खैर, इसे देखें और देखें कि आप क्या सोचते हैं : मैथ्यू अध्याय 7, छंद 21 और 22, वह कहता है, "हर कोई जो मुझसे कहता है, 'हे प्रभु, हे प्रभु' स्वर्ग के राज्य में प्रवेश नहीं करेगा, लेकिन केवल वह जो" - कौन क्या? स्वर्ग के राज्य में कौन जाता है? वे सभी जो यह छोटा वाक्यांश कहते हैं - जब मैं पाँच साल का था, तो मैंने प्रार्थना की, "मैं यीशु में विश्वास करता हूँ" और यीशु ने मेरे पापों को क्षमा कर दिया। इसलिए मैंने यह छोटा सा सूत्र कहा: "यीशु, मैं आप पर विश्वास करता हूँ और आप पर भरोसा करता हूँ" और यदि हम यह छोटा सा सूत्र कहते हैं तो हम बच जाते हैं। क्या यीशु यही कहते हैं? राज्य में कौन प्रवेश करता है? यहाँ वे इसे स्पष्ट रूप से कहते हैं। यह यीशु की शिक्षा है कि उनके राज्य में कौन प्रवेश करता है। और यह वे नहीं हैं जो कहते हैं "प्रभु, प्रभु" - इसे देखें - "लेकिन केवल वही जो," क्या? "मेरे स्वर्गीय पिता की इच्छा पूरी करता है।" "जो कोई भी मेरे स्वर्गीय पिता की इच्छा पूरी करता है। उस दिन बहुत से लोग मुझसे कहेंगे, 'प्रभु, प्रभु, क्या हमने आपके नाम से भविष्यवाणी नहीं की?'" दूसरे शब्दों में, "मैं एक उपदेशक था। मैं एक उपदेशक था। मैं बाहर गया और आपके सुसमाचार का प्रचार किया। मैंने आपके नाम से भविष्यवाणी की, और आपके नाम से मैंने दुष्टात्माओं को निकाला।" दूसरे शब्दों में, "यार, हम इतने अच्छे थे कि हम यीशु के नाम से दुष्टात्माओं को निकाल रहे थे, और कई चमत्कार कर रहे थे।" इन लोगों ने वास्तव में चमत्कार किए। उन्हें लगा कि वे मसीह के लिए चमत्कार कर रहे हैं। "तब मैं उनसे साफ-साफ कह दूँगा, 'मैंने तुम्हें कभी नहीं जाना। हे दुष्टों, मुझसे दूर हो

जाओ।" क्या ये लोग वास्तव में सोचते थे कि वे मसीह के नाम पर ये सब कर रहे थे - चमत्कार, भविष्यवाणी, उपदेश, दुष्टात्माओं को निकालना। मसीह कहते हैं, "मैंने तुम्हें कभी नहीं जाना।"

आत्म-धोखे की संभावना। मुझे लगता है कि यह आत्म-धोखे की संभावना को हमारे सामने लाता है - कि कोई व्यक्ति सोच सकता है कि वह ईसाई है। ये लोग जाहिर तौर पर सोचते थे कि वे ईसाई हैं, वे उन सभी चीजों को सूचीबद्ध करना शुरू करते हैं जो उन्होंने की हैं। और यीशु कहते हैं, "नहीं, नहीं। तुम्हें मेरे पिता की इच्छा पूरी करनी है।" तो फिर हमें यह पता लगाने की जरूरत है कि पिता की इच्छा क्या है। लेकिन इन लोगों ने सोचा कि वे ऐसा कर रहे हैं, और यीशु कहते हैं, "मैंने तुम्हें कभी नहीं जाना," और फिर वे कहते हैं, "मेरे पास से दूर हो जाओ, तुम बुरे काम करने वालों।" तो, आत्म-धोखे की संभावना है। मैं बस यह इसलिए उठा रहा हूँ क्योंकि मुझे लगता है कि बहुत से लोग खुद को ईसाई समझते हैं, और, जैसा कि मेरे बेटे ने एक बार मुझसे कहा था, मैं एक लेकर्स जर्सी खरीदता हूँ और लेकर्स जर्सी पहनता हूँ, क्या इससे मैं लेकर्स बास्केटबॉल खिलाड़ी बन जाता हूँ? नहीं। आप जानते हैं, अगर मैं लंबे समय तक गैरेज में रहता हूँ, तो क्या इससे मैं कार बन जाता हूँ? नहीं। आपको पिता की इच्छा पूरी करनी है और इसलिए आपको इनमें से कुछ बातों में बहुत सावधान रहना होगा।

जे. सच्चे और झूठे शिष्य – भेड़ और बकरियाँ [मत्ती 25] [32:18- 35:38]

तो, सच्चे और झूठे शिष्य हैं। यहाँ एक और है, और यह भी वास्तव में मर्मस्पर्शी है। यह भेड़ और बकरियाँ हैं, और यह अंतिम निर्णय में है। अब आप स्वर्ग में हैं, एक स्वर्गीय संदर्भ में, और पिता भेड़ों को बकरियों से अलग करने जा रहे हैं - भेड़ें उनके दाहिने हाथ पर, बकरियाँ उनके बाएँ हाथ पर। वह भेड़ों और बकरियों को कैसे अलग करता है? बकरियाँ बुरी होंगी जो गलत जगह जाएँगी। तो, वे किस आधार पर राज्य में प्रवेश करती हैं? भेड़ें किस आधार पर राज्य में प्रवेश करती हैं? मैं आपको यहाँ पढ़कर सुनाता हूँ, इसमें लिखा है, "फिर राजा बाईं ओर वालों की ओर मुड़ेगा और कहेगा," - बाईं ओर वालों से, तो ये बकरियाँ हैं - "तुम शापित लोगों, शैतान और उसके राक्षसों के लिए तैयार की गई अनन्त आग में चले जाओ।" वास्तव में, यह दिलचस्प है, क्या आप जानते हैं कि यीशु स्वर्ग के बारे में जितना बोलते हैं, उससे कहीं ज़्यादा नरक के बारे में बोलते हैं? और फिर भी

आज लोग कह रहे हैं, "ठीक है, बेशक कोई नरक नहीं है क्योंकि हमारे पास कोई पाप नहीं है।" नंबर एक - हमारी संस्कृति, हम पाप की पूरी धारणा को मिटा देते हैं और इसलिए हम बाद में किसी भी तरह के परिणामों की धारणा को मिटा देते हैं। आखिरकार हम अमेरिकी हैं। हम जो चाहें कर सकते हैं और कोई परिणाम नहीं है, है न? नहीं। यीशु इस बारे में बात करते हैं, वे कहते हैं, "शापित लोगों, शैतान और उसके राक्षसों के लिए तैयार की गई अनन्त आग में।" अब, क्यों? क्यों? - "क्योंकि मैं भूखा था और तुमने मुझे खाना नहीं खिलाया। मैं प्यासा था और तुमने मुझे पानी नहीं पिलाया। मैं अजनबी था और तुमने मुझे अपने घर में नहीं बुलाया।" तब वे उत्तर देंगे, 'हे प्रभु, हमने आपको कब भूखा या प्यासा या अजनबी या नंगा या बीमार या जेल में देखा और आपकी मदद नहीं की?' और वह उत्तर देगा, 'मैं तुमसे सच कहता हूँ। जब तुमने मेरे भाइयों और बहनों, इनमें से सबसे छोटे की मदद करने से इनकार कर दिया, तो तुमने मेरी मदद करने से इनकार कर दिया।'" वे आश्चर्यचकित थे। "हमने तुम्हें कब देखा? हमने तुम्हें कब बीमार और नंगा देखा और तुम्हारी मदद नहीं की?" वे आश्चर्यचकित थे। उन्हें लगा कि उन्होंने ऐसा किया है। और यीशु कहते हैं, नहीं, नहीं। 'जितना तुमने इनमें से सबसे छोटे के साथ किया है, तुमने मेरे साथ किया है।' यह भी दिलचस्प है, जब आप भेड़ों के पास जाते हैं, और वह भेड़ों से कहते हैं, "मेरे राज्य में आओ।" भेड़ें कहती हैं, "अच्छा, हम यहाँ कैसे आएँ?" वह कहते हैं, "जितना तुमने इनमें से सबसे छोटे के साथ किया है, तुमने मेरे साथ किया है।" और भेड़ों को खुद भी नहीं पता था कि उन्होंने कब इन लोगों की मदद की थी और इस तरह की चीजें, इसलिए यहाँ इस तरह का उलटफेर दिलचस्प है। फिर से, मैं सिर्फ आत्म-धोखे के मुद्दे को उठा रहा हूँ। स्कॉट पेक की पुरानी किताब *पीपल ऑफ़ द लाइ के बारे में लोगों को जागरूक करने के लिए एक बहुत ही महत्वपूर्ण पुस्तक है*। जो होता है वह यह है कि हम अपने आप से और यहाँ अंत में यीशु से जो झूठ बोलते हैं, उससे हम सहज हो जाते हैं। कोई बहाना नहीं है, और फिर से, हमारी संस्कृति बहानों से बनी है। हम हमेशा पीड़ित होते हैं। हमारे पास हमेशा कोई न कोई बहाना होता है, और यीशु कहते हैं, "नहीं, नहीं। यह यहाँ काम नहीं करता। भले ही आपने एक बात सोची हो, लेकिन वह वास्तविकता नहीं थी, और आपको अब वास्तविकता का सामना करना होगा, और आपके निर्णयों के परिणाम होंगे। आपने इनमें से सबसे कम लोगों की मदद नहीं की और

इसलिए मुझे छोड़ो, अधर्म के कार्यकर्ता।" यह एक बहुत ही मजबूत अंश है जो आत्म-धोखे के इस मुद्दे को उठाता है।

पिता की इच्छा पूरी करना – क्या मैं ईसाई हूँ? [35:38-39:46]

अब, एक और बात, आइए इस पर वापस जाएं और बस एक और बात जो मैं उठाना चाहता हूँ। यीशु, अपने शिष्यों के संदर्भ में, वह आता है और उसकी माँ और भाई उसके पास आते हैं। उसकी माँ और उसके भाई, मरियम और याकूब और यूसुफ, यीशु के पास आते हैं और मूल रूप से, वे यीशु को देखना चाहते हैं, और यीशु - और यह मत्ती अध्याय 12, श्लोक 49 है - उसने अपने शिष्यों की ओर इशारा किया और कहा, "ये मेरी माताएँ और भाई हैं।" दूसरे शब्दों में, वह यहाँ परिवार और समुदाय की अपनी परिभाषा का विस्तार कर रहा है, माँ और भाइयों के साथ रक्त रेखा से दूर, जो कि वह रक्त-संबंधी है, और वह मूल रूप से इसका विस्तार करता है कि, "ये शिष्य, ये मेरे हैं। ये माँ और भाई हैं।" फिर वह यह कहता है: "जो कोई भी मेरे स्वर्गीय पिता की इच्छा पर चलता है, वह मेरा भाई और बहन और माँ है।" उसका भाई कौन है? उसकी बहन कौन है? "जो कोई भी मेरे स्वर्गीय पिता की इच्छा पर चलता है, वह मेरा भाई और बहन और माँ है।" ध्यान दें कि वह आपको यह कहने के लिए कोई छोटा सा सूत्र नहीं देता है, "ओह हाँ, बस मुझ पर विश्वास करो, मुझे बताओ कि तुम मुझ पर विश्वास करते हो और फिर सब कुछ ठीक हो जाएगा।" नहीं, वह ऐसा नहीं कहता है। वह कहता है, "जो कोई मेरे स्वर्गीय पिता की इच्छा पूरी करता है।"

और फिर, सच्चे और झूठे शिष्यों के इस तरह के विचार के साथ एक आखिरी। इसे देखें। बुद्धिमान व्यक्ति ने अपना घर चट्टान पर बनाया। मूर्ख व्यक्ति ने अपना घर रेत पर बनाया। हर कोई इस तरह की कहानी जानता है, बुद्धिमान व्यक्ति ने अपना घर चट्टान पर बनाया - हम बचपन में यह गाना गाते थे - और मूर्ख व्यक्ति ने अपना घर रेत पर बनाया। बुद्धिमान व्यक्ति और मूर्ख व्यक्ति के बीच क्या अंतर है? यह मैथ्यू अध्याय 7 है, फिर से, पहाड़ी उपदेश में यीशु यह कहते हैं: "इसलिए, जो कोई भी मेरे इन शब्दों को सुनता है और उन्हें अमल में लाता है, वह उस बुद्धिमान व्यक्ति की तरह है जिसने अपना घर चट्टान पर बनाया। जो कोई भी मेरे इन शब्दों को सुनता है और उन्हें अमल में नहीं लाता है वह उस मूर्ख व्यक्ति की तरह है जिसने अपना घर रेत पर बनाया।" तो यीशु यहाँ एक

स्पष्ट अंतर कर रहे हैं - सच्चे शिष्य जो यीशु के शब्दों को सुनते हैं और उन्हें अमल में लाते हैं। अब यीशु के शब्द क्या हैं? उन्होंने पहाड़ी उपदेश में तीन अध्यायों के लिए इसके बारे में बात की है। "धन्य हैं वे जो मन के दीन हैं, क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है। धन्य हैं वे जो मन के शुद्ध हैं, क्योंकि वे परमेश्वर को देखेंगे। धन्य हैं तुम जब लोग तुम्हें सताते हैं और धार्मिकता के लिए हर तरह के बुरे काम करते हैं, क्योंकि स्वर्ग का राज्य तुम्हारा है।" यीशु ने अपनी शिक्षाओं में समझाया और कहा, "जो कोई भी इन शब्दों को सुनता है और उन्हें अमल में लाता है।" यह कहना ही काफी नहीं है, "मैं सुनता हूँ और हाँ, मैं इस बात पर विश्वास करता हूँ।" नहीं, नहीं। उसे इसे अमल में लाना होगा।

वास्तव में एक अभ्यास जो मैं खुद के साथ करता हूँ, वह है, काफी नियमित आधार पर, मैं खुद से यह पूछता हूँ: "क्या मैं एक ईसाई हूँ?" मैं खुद से यह सवाल पूछता हूँ: "क्या मैं एक ईसाई हूँ?" और आप कहते हैं, "ओह, डॉ. हिल्डेब्रांट, आप इन सभी वर्षों से बाइबल पढ़ा रहे हैं।" उन लोगों को याद करें जिन्होंने वचन का प्रचार किया और उन्होंने कहा, "मुझसे दूर हो जाओ, बुरे कर्म करने वालों?" मैं खुद से पूछता हूँ, "क्या मैं एक ईसाई हूँ?" और जवाब "ओह, बिल्कुल। हाँ" नहीं है। क्या मैं पिता की इच्छा पूरी कर रहा हूँ? मुझे लगता है कि यह एक स्वस्थ सवाल है कि कोई व्यक्ति खुद से गंभीरता से विचार करे, "क्या मैं एक ईसाई हूँ?" और खुद से पूछे, "क्या मैं यीशु के पदचिन्हों पर चल रहा हूँ? क्या मैं अपना क्रूस उठा रहा हूँ और उसका अनुसरण कर रहा हूँ?" और इसलिए, मुझे लगता है कि यह एक स्वस्थ बात है, किसी डर के संदर्भ में नहीं, जैसे कि मैं अपना उद्धार खुद कमा रहा हूँ और मुझे ये सभी काम करने हैं। "नहीं, लेकिन मुझे लगता है कि यह सोचना एक स्वस्थ बात है ताकि कोई अपनी ईसाई धर्म के प्रति लापरवाह न हो जाए। वे कहते हैं, "ओह हाँ, मैं एक ईसाई हूँ। कोई समस्या नहीं। मैंने लेकर्स की जर्सी पहनी है, देखिए? और लेकर्स की जर्सी का मतलब है कि मैं लेकर्स के साथ बास्केटबॉल खेलता हूँ।" नहीं। आप जर्सी पहन रहे हैं, आप खिलाड़ी नहीं हैं। इसलिए आपको इसके साथ सावधान रहना होगा, और मुझे लगता है कि यह पूछना एक स्वस्थ सवाल है - "क्या मैं एक ईसाई हूँ?" और इस बारे में गहराई से सोचना चाहिए कि इसका क्या मतलब है।

एल. यीशु का धर्मशास्त्र – महान शिक्षक [39:46-43:58]

[E = संयुक्त लघु वीडियो: LM; 43:58-48:18]

मूसा से भी महान

तो, सच्चे और झूठे शिष्य, शिष्यत्व की कीमत - ये बहुत भारी चीजें हैं। अब मैं आगे क्या करना चाहता हूँ - हम अब शिष्यत्व से हटकर विषय बदलने जा रहे हैं। हमने शिष्यत्व की विभिन्न चीजों के बारे में बात की है - शिष्यत्व की कीमत, शिष्यत्व में शामिल धार्मिकता, शिष्यों की समझ, एक शिक्षक के रूप में यीशु, और सच्चे और झूठे शिष्य, और इस तरह की चीजें। अब मैं मैथ्यू के यीशु के धर्मशास्त्र की ओर मुड़ना चाहता हूँ - यीशु का धर्मशास्त्र और मैथ्यू यीशु को कैसे चित्रित करता है। प्रत्येक सुसमाचार लेखक यीशु को अलग-अलग तरीके से चित्रित करेगा। वास्तव में, मैथ्यू, मार्क और ल्यूक को सिनॉट्रिक सुसमाचार कहा जाता है क्योंकि वे मसीह को एक आँख से देखते हैं। "सिन ऑट्रिक" - एक ऑट्रिक के माध्यम से, एक आँख से। तो, मैथ्यू, मार्क और ल्यूक को सिनॉट्रिक्स कहा जाता है क्योंकि वे एक दूसरे के समानांतर हैं, वे एक दूसरे पर बहुत अधिक निर्भर प्रतीत होते हैं, जबकि जॉन हमें एक बिल्कुल अलग दृष्टिकोण देने जा रहा है। जैसा कि हमने पहले कहा, यीशु के बारे में कई दृष्टिकोण रखना वाकई बहुत बढ़िया है क्योंकि तब हर व्यक्ति अपने दृष्टिकोण से लिखेगा कि उसने यीशु को कैसे देखा। इससे हमें यह मिलता है - जैसा कि हमने कहा, हमें गहराई से देखने के लिए दो आँखों की ज़रूरत है, और इसलिए हम कई दृष्टिकोणों से देख सकते हैं - हमें इन कई सुसमाचारों से यीशु के बारे में गहराई से समझ मिलती है। जॉन बहुत अलग होने जा रहा है - मुझे याद नहीं है कि, जॉन का लगभग 92 प्रतिशत हिस्सा जॉन की पुस्तक के लिए पूरी तरह से अनूठा है। मैथ्यू, मार्क और ल्यूक में - बहुत सी समानताएँ होंगी लेकिन फिर भी मैथ्यू, मार्क और ल्यूक प्रत्येक ने मसीह को अलग-अलग तरीके से चित्रित किया है। इसलिए मैं चुनना चाहता हूँ - इसका एक हिस्सा यह है कि वे कौन हैं। लेखक एक निश्चित तरीके से यीशु को चित्रित और देखेंगे। दूसरी चीज़ जो वास्तव में महत्वपूर्ण है वह है वह पाठक जिसे वे लिख रहे हैं, और मार्क रोमन पाठकों को लिखते हुए प्रतीत होंगे और इसलिए वे यीशु में बहुत से रोमन विषयों को उठाएँगे। ऐसा लगता है कि मत्ती यहूदी श्रोताओं को लिख रहा है - आरंभिक चर्च में कुछ लोगों ने वास्तव में

सोचा था कि मत्ती को अरामी भाषा में लिखा गया था, और इस बात पर एक बड़ी बहस हुई थी कि क्या मत्ती को मूल रूप से अरामी भाषा में लिखा गया था और फिर उसका ग्रीक में अनुवाद किया गया था या यह मूल रूप से ग्रीक में लिखा गया था। इसलिए मत्ती में यहूदी रुझान प्रतीत होता है, श्रोताओं के संदर्भ में मार्क अधिक रोमन है, और फिर लूका, निश्चित रूप से, परम श्रेष्ठ थियोफिलस को लिख रहा है, जो प्राचीन दुनिया में कुछ महत्वपूर्ण व्यक्ति है, जिसे वह लूका और प्रेरितों के काम दोनों लिख रहा है, इस नेता को। इसलिए, लेखक के स्वयं के दृष्टिकोण और वे कौन हैं, लेकिन उनके द्वारा लिखे जा रहे श्रोताओं के संदर्भ में भी अलग-अलग दृष्टिकोण हैं, और हम व्याख्याकारों के रूप में, हमें यह समझने के लिए कि वह क्या संप्रेषित कर रहा है, दोनों को ध्यान में रखना होगा कि लेखक कौन था और श्रोता कौन थे।

तो, मैथ्यू के दृष्टिकोण से मसीह का धर्मशास्त्र, और मैथ्यू यीशु को कैसे देखता है और यह कैसे अद्वितीय है और चीजें क्या हैं? मैथ्यू ने यीशु को जिस पहली चीज़ के रूप में चित्रित किया है, वह यह है कि यीशु महान शिक्षक हैं। मैथ्यू की पुस्तक में, यीशु एक रब्बी की तरह हैं, जो चारों ओर जाकर शिक्षा देते हैं, और इसलिए वे महान शिक्षक हैं। और इसलिए, अध्याय 12, श्लोक 42 में कहा गया है, जैसा कि आपने देखा कि यीशु - यहाँ "सुलैमान से भी बड़ा कोई है"। सुलैमान प्राचीन दुनिया, प्राचीन इज़राइल का महान बुद्धिमान व्यक्ति था, और अब "सुलैमान से भी बड़ा कोई है।" याद रखें कि हमने कैसे कहा कि मैथ्यू की पुस्तक में यीशु को नए मूसा के रूप में चित्रित किया गया है, और हम उस विषय पर भी वापस आएं, नए मूसा। लेकिन यहाँ हम देखते हैं कि सुलैमान जितना बुद्धिमान शिक्षक था - वह व्यक्ति जिसने हमें पुराने नियम की कई कहावतें दीं और वह बुद्धिमान शिक्षक था। "हे मेरे बेटे, अपने पिता की शिक्षा सुनो" और सुलैमान चला जाता और सिखाता। यीशु, "सुलैमान से भी बड़ा कोई", अब यहाँ है, और वह यीशु है। इसलिए, यीशु एक ज्ञान शिक्षक हैं और उन्हें चित्रित किया गया है, और यहां तक कि उनके द्वारा उपयोग किए जाने वाले कुछ रूप भी: आनंद - "धन्य हैं वे जो मन में दीन हैं, क्योंकि स्वर्ग का राज्य उनका है," "धन्य हैं वे जो हृदय से शुद्ध हैं..." - "धन्य," वह सूत्र, आशीर्वाद - आनंद एक ज्ञान रूप है। यह एक साहित्यिक रूप है जिसका उपयोग पुराने नियम में ऋषियों द्वारा किया गया था, इसलिए यीशु वही हैं।

यीशु मूसा से महान है [43:58-48:18]

यीशु मूसा से महान हैं, और इसलिए आपको मूसा के साथ यह तुलना मिलती है: "आपने इसे पुराने समय में कहा है," और फिर वह पुराने नियम से कई जगहों पर बातें उद्धृत करता है, "लेकिन मैं तुमसे कहता हूँ," - वह एक आधिकारिक शिक्षक है। वह मूसा से भी महान है। मूसा ने कानून बनाया। जैसा कि मूसा के पास पाँच पुस्तकें थीं - उत्पत्ति, निर्गमन, लैव्यव्यवस्था, संख्याएँ और व्यवस्थाविवरण - जिन्हें पेंटाटेच कहा जाता है, "पेंटा" - पाँच, "टेउच" - पुस्तक, पाँच पुस्तकें, तोराह की पहली पाँच पुस्तकें, निर्देश की पुस्तकें, तोराह। मैथ्यू की पुस्तक में, यीशु पाँच प्रवचन प्रस्तुत करते हैं। और इसलिए आपको मूल रूप से पहाड़ी उपदेश, बारह लोगों को भेजना, राज्य के दृष्टांत, मैथ्यू 18 में चर्च पर शिक्षाएँ, और फिर 24 और 25 में जैतून का प्रवचन मिलता है। तो यीशु ने ये पाँच प्रवचन दिए जो कि, जैसा कि हमने कहा, उस सामान्य वाक्यांश से शुरू होते हैं, "जब यीशु ने यह समाप्त किया..." और यह शुरू हो गया। तो मैथ्यू यीशु के इन पाँच प्रमुख प्रवचनों के इर्द-गिर्द अपनी पुस्तक की संरचना करता हुआ प्रतीत होता है।

कुछ लोग सोचते हैं - और मुझे लगता है कि यह उचित है - कि मैथ्यू यीशु के इन पाँच प्रवचनों को यीशु को नए मूसा के रूप में समानांतर बनाने के लिए स्थापित कर रहा है। तो यह वहाँ एक दिलचस्प संबंध है - मैथ्यू के पाँच खंड, नया कानून जैसा कि डिसिल्वा ने अपने नए नियम के परिचय में बताया है। मूसा और यीशु के बीच समानताएँ दिलचस्प हैं। मेरा मतलब है, यीशु और मूसा के बीच एक उद्देश्यपूर्ण और जानबूझकर समानता प्रतीत होती है। उदाहरण के लिए, शिशुओं को मार दिया जाता है। सभी सुसमाचारों में से केवल मैथ्यू ही एकमात्र ऐसा है जो हमें बताता है कि हेरोदेस ने बेथलेहम में सभी शिशुओं को मार डाला। हमने कहा कि बेथलेहम एक छोटा शहर था, इसलिए हम बात नहीं कर रहे हैं - जब मैं छोटा था, तो मुझे लगा कि वहाँ सैकड़ों और हज़ारों बच्चे मर रहे हैं, दो साल से कम उम्र के। यह एक बहुत छोटा शहर है। हम शायद उस समय शायद एक दर्जन से कम बच्चों की बात कर रहे हैं क्योंकि यह एक बहुत ही छोटा शहर था। जैसा कि हमने कहा, यह आसानी से फिट हो जाएगा - बेथलेहम यहाँ गॉर्डन कॉलेज परिसर में आसानी से फिट हो

जाएगा, और इसलिए यह एक बड़ी जगह नहीं है। लेकिन एक राजा - यीशु के जन्म पर शिशुओं की हत्या की गई। क्या आपको याद है कि मूसा के जन्म के समय अन्य शिशुओं की भी हत्या की गई थी? याद है कि वे नदी में शिशुओं को डाल रहे थे और फिर वे हिब्रू दाइयों और अन्य लोगों के साथ सभी नर शिशुओं को मारने की कोशिश कर रहे थे? तो आपके पास शिशु मरते हुए और फिर मूसा जी उठते हुए, और फिर यीशु, आपके पास शिशु मरते हुए और यीशु जी उठते हुए हैं। तो आपको यह समानता मिलती है - और यह केवल मैथ्यू में ही किया गया है, अन्य सुसमाचार लेखकों के पास यह नहीं है। दोनों मूसा - मूसा मिस्र जाता है, मूसा मिस्र में है - और यीशु मिस्र जाता है। यूसुफ और मरियम - स्वर्गदूत यूसुफ के पास आता है और कहता है, "मिस्र जाओ क्योंकि हेरोदेस बकरी को मारने की कोशिश करने जा रहा है।" और इसलिए मूल रूप से, यूसुफ ने मरियम और यीशु को पैक किया और वे मिस्र चले गए। फिर यीशु मिस्र से बाहर आ गए। जब यीशु मिस्र से बाहर आए, तो यह था: "मैंने अपने बेटे को मिस्र से बुलाया है।" ठीक वैसे ही जैसे होशे अध्याय 11:1 कहता है: "मैंने अपने बेटे को मिस्र से बुलाया है" और उसका बेटा इस्राएल था और उसका नेतृत्व कौन कर रहा था? वह मूसा था। इसलिए जैसे मूसा इस्राएल के साथ मिस्र से बाहर आता है, वैसे ही यीशु अपने शुरुआती वर्षों में मिस्र से बाहर आते हैं। इसलिए, यीशु इस तरह के नए मूसा हैं। यीशु मिस्र से बाहर आने वाले नए मूसा हैं। मूसा और यीशु दोनों एक पहाड़ पर परमेश्वर से मिलते हैं। मूसा माउंट सिनाई जाता है और माउंट सिनाई, माउंट होरेब पर परमेश्वर से वाचा, अविश्वसनीय वाचा प्राप्त करता है। यीशु रूपांतरण के पर्वत पर परमेश्वर से मिलते हैं, और इसलिए यह एक बहुत ही दिलचस्प बात है। वे दोनों एक पहाड़ पर परमेश्वर से मिलते हैं, और फिर रूपांतरण होता है। मैथ्यू अध्याय 17 में रूपांतरण के समय, कौन दिखाई देता है? मूसा और एलिय्याह। याद है? एलिय्याह को पहले आना चाहिए था और जॉन बैपटिस्ट, वहाँ कुछ संबंध हैं। लेकिन मूसा के साथ - मूसा रूपांतरण के पर्वत पर था, इसलिए यीशु इस नए मूसा की तरह है और रूपांतरण के पर्वत पर मूसा के साथ चर्चा, संवाद कर रहा है। इसलिए मूसा और यीशु के बीच यह समानता प्रतीत होती है। मैथ्यू की पुस्तक में यीशु नए मूसा हैं।

N. यीशु चंगाईकर्ता के रूप में – सूबेदार का सेवक [48:18-53:15]

[F = संयुक्त लघु वीडियो: NF; 48:18-60:05]

मसीह चंगाईकर्ता के रूप में, परमेश्वर हमारे साथ

अब, यीशु को देखने के कुछ और तरीके भी हैं। पुराने नियम में, यहोवा को चंगा करने वाला माना जाता था। "अदोने रोफ़े" - प्रभु, चंगा करने वाला। मैथ्यू इसे उठाता है, इसलिए आप मैथ्यू की पुस्तक में यीशु को एक चंगा करने वाले के रूप में देखते हैं। यीशु द्वारा किए गए चमत्कारों के दो प्रकार हैं। एक को उपचारात्मक चमत्कार कहा जाता है और यह तब होता है जब यीशु वास्तव में किसी को चंगा करते हैं और उन्हें ठीक करते हैं। उन्हें कोई शारीरिक बीमारी है और वे इसे ठीक करते हैं, इसे उपचारात्मक चमत्कार कहा जाता है। लेकिन गैर-चिकित्सात्मक चमत्कार भी हैं। अब एक गैर-चिकित्सात्मक चमत्कार होगा, यीशु पानी पर चलते हैं। कोई भी ठीक नहीं हुआ। कोई चिकित्सीय उपचार नहीं था। बस यीशु पानी पर चलते थे। रूपांतरण के समय, यीशु का रूपांतरण होता है और उनके सामने उनका रूपांतरण होता है। यह फिर से, यह एक चमत्कार है - यह एक चमत्कार है, लेकिन यह एक चिकित्सीय चमत्कार नहीं है। अतः चमत्कार दो प्रकार के होते हैं – उपचारात्मक और गैर-उपचारात्मक चमत्कार।

फिर जब आप उपचारात्मक चमत्कारों को देखते हैं, तो मैथ्यू अध्याय 8 की पुस्तक में कुछ सुंदर कहानियाँ हैं, उदाहरण के लिए। एक सेंचुरियन है। अब, सेंचुरियन एक रोमन सेंचुरियन है, इसलिए वह रोम से आ रहा है, उसके पास सौ से ज़्यादा लोग हैं। उनकी सेनाएँ आमतौर पर, लगभग छह हज़ार होती थीं - मुझे नहीं पता; सेनाएँ काफ़ी बड़ी थीं। फिर सेनाओं में, इसे विभिन्न स्तरों पर विभाजित किया गया था, और यह आदमी सौ से ज़्यादा लोगों का था। तो वह एक सेंचुरियन है, और वह एक बड़ी हस्ती है। वह एक महत्वपूर्ण व्यक्ति है। वह एक रोमन सेंचुरियन है। फिर से, यहूदी रोमनों के अधीन हैं, और इसलिए सेंचुरियन आमतौर पर नकारात्मक, रोमन वर्चस्व वाले होते हैं। सेंचुरियन यीशु के पास आता है, और फिर सेंचुरियन यीशु से अपने नौकर को ठीक करने के लिए कहता है क्योंकि उसका नौकर वास्तव में संघर्ष कर रहा है और उसके नौकर को

कुछ चिकित्सा समस्या है, और यीशु - वह मूल रूप से यीशु से पूछता है। "क्या आप आकर मेरे नौकर को ठीक करेंगे?"

अब यह बहुत दिलचस्प है कि सूबेदार - सूबेदार सौ से ज़्यादा - क्या वह अपने नौकर के बारे में चिंतित है? सूबेदार अपने नौकर के बारे में बहुत चिंतित है। वह अपने लिए नहीं, बल्कि अपने नौकर के लिए आ रहा है। मुझे लगता है कि यह सूबेदार के चरित्र को दर्शाता है। सूबेदार यह नहीं कहता कि "मैं एक शक्तिशाली सूबेदार हूँ जो सौ से ज़्यादा रोमन सैनिकों का सरदार हूँ और मैं लोगों को उड़ा सकता हूँ" - नहीं, नहीं, नहीं। इस सूबेदार के पास एक नौकर है जो पीड़ित है, और वह यीशु से मदद माँगने के लिए आता है। तो फिर वह क्या है? उसकी स्थिति के संदर्भ में, यह सूबेदार को यीशु के अधीन रखता है। वह अपने नौकर के लिए मदद माँगने यीशु के पास आ रहा है। इसका मतलब है कि उसे अपने ऊँचे सूबेदार घोड़े से उतरना होगा और यीशु के नीचे उतरकर यीशु से अनुरोध करना होगा। अब, समस्या यह है कि सूबेदार यीशु के पास आता है, और यीशु कहते हैं, "ठीक है, मैं तुम्हारे साथ चलूँगा।" सूबेदार यीशु को रोकता है और कहता है, "मैं इस योग्य नहीं हूँ कि तुम मेरे घर में आओ। मैं इस योग्य नहीं हूँ कि तुम मेरे घर में आओ।" फिर से, इस सूबेदार में - आप इस आदमी में विनम्रता देखते हैं। वह बहुत शक्तिशाली आदमी है, लेकिन आप उसकी विनम्रता देखते हैं। "मैं इस योग्य नहीं हूँ कि तुम मेरे घर में आओ," और फिर वह कहता है, "मैं अधिकार के अधीन एक आदमी हूँ और मैं इसे समझता हूँ। मैं बोलता हूँ और लोग वही करते हैं जो मैं कहता हूँ। हाँ, मैं वह आदमी हूँ। मैं बोलता हूँ और मैं लोगों को उनकी मृत्यु के लिए भेज सकता हूँ। मैं बोलता हूँ और लोग मेरी आज्ञा का पालन करते हैं। मैं वह आदमी हूँ। मैं जानता हूँ कि अधिकार के अधीन होना और लोगों के बीच रहना कैसा होता है, जहाँ आप बोलते हैं और वे उछल पड़ते हैं क्योंकि मैं एक सूबेदार हूँ।" और वह यीशु से कहता है, "बस शब्द बोलो और मेरा सेवक ठीक हो जाएगा।" यीशु की टिप्पणी क्या है? आम तौर पर यीशु अपने शिष्यों को डांटते हैं - "तुम लोग अभी भी इसे नहीं समझते हो?" या, "ओह, तुम अल्पविश्वासी हो" - और वह अपने ही शिष्यों को डांट रहे हैं। वह सूबेदार की ओर मुड़ता है और सूबेदार कहता है, "बस वचन बोलो - तुम्हें मेरे घर आने की ज़रूरत नहीं है। मेरा घर तुम्हारे योग्य नहीं है। बस वचन बोलो और वह चंगा हो

जाएगा।" और यीशु कहते हैं, क्या, "मैंने पूरे इस्राएल में ऐसा विश्वास नहीं पाया है। मुझे ऐसा विश्वास नहीं मिला है" - सूबेदार। यीशु वचन बोलते हैं और वह व्यक्ति चंगा हो जाता है। नौकर चंगा हो जाता है। कितनी सुंदर कहानी है! यीशु बोलते हैं और चीजें घटित होती हैं। अब, वैसे, पुराने नियम की कक्षा से कोई भी व्यक्ति आपको याद है। कौन बोलता है और चीजें घटित होती हैं? "शुरुआत में, परमेश्वर ने सृष्टि की और उसने कहा, 'प्रकाश हो' और प्रकाश हो गया।" "परमेश्वर बोला और चीजें अस्तित्व में आईं" - भजन 33:6। उसने अपने वचन से बोला, और अब आप यीशु को बोलते और लोगों को चंगा करते हुए देख सकते हैं। जीवन की बीमारियाँ, जीवन में जो चीजें गलत हैं, यीशु बोल सकते हैं और उन्हें सही कर सकते हैं और इस व्यक्ति को चंगा कर सकते हैं। तो यह वाकई बहुत दिलचस्प है, खास तौर पर यहूदियों के लिए लिखी गई किताब में सूबेदार के नौकर के साथ।

ओ. यीशु स्पर्श के माध्यम से चंगा करते हैं: एक समस्या वाली महिला [53:15-56:32]

दूसरा यह है कि जब वह जा रहा था, तो एक आदमी आया, उसका नाम जैरस था। जैरस की एक बेटी है जो मरने वाली है, वह मरने वाली है, यीशु उसे भी ठीक करने जा रहा है, इसलिए एक और उपचारात्मक चमत्कार। यह मैथ्यू अध्याय 8 में है। मैथ्यू अध्याय 8 और 9 में बहुत सारे चमत्कार हैं। अध्याय 13 - मैथ्यू और दृष्टांत, लेकिन अध्याय 8 और 9 - मैथ्यू में बहुत सारे चमत्कार हैं। तो, यीशु भीड़ के बीच से जा रहा है, हर कोई यीशु और चीजों को धक्का दे रहा है, और फिर अचानक यीशु - यीशु कैसे ठीक करता है? खैर, हमने अभी सेंचुरियन के साथ देखा, उसने बोला और यह हुआ। लेकिन वह बहुत बार कैसे ठीक करता है? स्पर्श के माध्यम से। तो लोग उसे भीड़ में धकेल रहे हैं, वह जैरस के पीछे जा रहा है - उस आदमी की बेटी मर रही है, वह मरने वाली है। इसलिए वह उसे ठीक करने के लिए उस आदमी के घर जा रहा है। वह भीड़ के बीच से जा रहा है - भीड़ धक्का दे रही है - अचानक एक महिला आती है और कहती है "यार, अगर मैं उसके कपड़े के किनारे को छू सकती। अगर मैं उसके कपड़े को छू सकती, तो मैं ठीक हो जाती।" उसे खून बह रहा है। उसे सालों से खून बह रहा है और वह कई डॉक्टरों के पास जा चुकी है और कोई भी उसे ठीक नहीं कर पाया है। उसने कहा "अगर मैं उसके कपड़े के किनारे को छू सकती..."

वह भीड़ को चीरती हुई आगे बढ़ती है, उसे छूती है, और अचानक - अब, आपको इसे यहूदी दृष्टिकोण से सोचना होगा। वह एक महिला है जिसका खून बह रहा है। क्या वह शुद्ध है या अशुद्ध? पिछले सेमेस्टर में हमने जिस लेविटस की किताब का अध्ययन किया था, उसके बारे में सोचें। क्या वह शुद्ध है या अशुद्ध? उसका खून बह रहा है। वह अशुद्ध है। अब, शुद्धता कैसे फैलती है? आम तौर पर शुद्धता और अशुद्धता स्पर्श से फैलती है। और अगर कोई अशुद्ध है, मान लीजिए, उसे कोढ़ है, और वह आपको छूता है, तो आप शाम तक अशुद्ध हो जाते हैं, और आपको नहाना पड़ता है और इस तरह की कई चीजें करनी पड़ती हैं। तो यह अशुद्ध महिला यीशु के पास आती है और उसके वस्त्र को छूती है। यीशु को अशुद्ध किया जाना चाहिए था। लेकिन इसके बजाय क्या होता है? यह उस पर उल्टा असर करता है। वह उसे छूती है और वह शुद्ध हो जाती है। वह ठीक हो जाती है। यीशु उसकी ओर मुड़ते हैं और उससे कहते हैं, "नहीं, नहीं, यह तुम नहीं हो जिसने मेरे वस्त्र को छुआ है, यह तुम्हारा विश्वास है जिसने तुम्हें ठीक किया है।" यीशु ने उसे ठीक किया है। तो, यह इस महिला के साथ एक सुंदर, सुंदर मार्ग है। फिर से, यीशु ने उसे कैसे ठीक किया? स्पर्श के माध्यम से। उसने यीशु को छुआ और ठीक हो गई।

मुझे लगता है कि दूसरा, जिसने छुआ - और यह सिर्फ सिर के ऊपर से है - यह मैथ्यू अध्याय 8 में भी है। क्या आपको पीटर की सास याद है? पीटर की एक सास थी, और पीटर की सास बुखार से बीमार थी, और यीशु ने पीटर की सास को कैसे ठीक किया? वह उसके पास आया और उसे छू लिया, उसने उसका हाथ पकड़ लिया, और उसका बुखार उतर गया। तो यीशु, मैं कैसे कहूँ? - यीशु लोगों को छूता है। यीशु लोगों को छूता है, वह उन्हें ठीक करता है, और वे ठीक हो जाते हैं। यह यीशु के बोलने और लोगों को ठीक करने की एक सुंदर छवि है। यीशु लोगों को छूते हैं - छूने का क्या मतलब है? कि यीशु करीब है। छूना एक बहुत ही करीबी तरह की चीज है, और यीशु करीब है और लोगों को छूता है और उन्हें ठीक करता है। और इसलिए, आपको चिकित्सीय चमत्कार मिलते हैं कि यीशु एक मरहम लगाने वाला है। यीशु एक मरहम लगाने वाला है, और लोगों को ठीक करता है - यह अद्भुत है - उसके स्पर्श और उसके भाषण के साथ। वह बोलता है और यह होता है।

पी. इम्मानुएल – परमेश्वर हमारे साथ [56:32-60:05]

अब, इम्मानुएल को लें। यह एक और पहलू है। अब जब आप कहते हैं कि "आप मैथ्यू की पुस्तक में मसीह के ईश्वरत्व की शिक्षा दे रहे हैं।" अधिकांश लोग मसीह के ईश्वरत्व की शिक्षा देने के बारे में सोचते हैं, तो आप आमतौर पर सोचते हैं - आप किस पुस्तक का अध्ययन करेंगे? कोई व्यक्ति मसीह के ईश्वरत्व के साथ संघर्ष कर रहा है। मान लीजिए, कुछ यहोवा के साक्षी आपके दरवाजे पर आते हैं, और वे कहने लगते हैं, "ठीक है, यीशु वास्तव में एक ईश्वर है, वह वास्तव में ईश्वर नहीं है " और वे अपने न्यू वर्ल्ड ट्रांसलेशन के साथ यह सब कहना शुरू कर देते हैं और आपको प्रभावित करने की कोशिश करते हैं। आप आमतौर पर इसका खंडन करने के लिए, यह दिखाने के लिए कि यीशु मसीह ईश्वर है, किस पुस्तक का अध्ययन करते हैं? आप आमतौर पर जॉन 1:1 का अध्ययन करते हैं - "आदि में वचन था," - यीशु - "आदि में वचन था, वचन ईश्वर के साथ था, वचन ईश्वर था। - वचन ईश्वर था।" "और वचन देहधारी हुआ और हमारे बीच में वास किया।" और इसलिए हम जानते हैं कि यह यीशु है और यह इस बारे में बात कर रहा है कि वचन परमेश्वर था, और "मैं और पिता एक हैं," और यूहन्ना की पुस्तक से अन्य अंश। बेशक, उनके पास उन आयतों और बाइबल से गलत अनुवादों का खंडन है, लेकिन आमतौर पर जब आप यीशु के देवता होने की शिक्षा के बारे में सोचते हैं तो आप यूहन्ना की पुस्तक में जाते हैं।

मैं मैथ्यू की पुस्तक को देखना चाहता हूँ और मैथ्यू में मसीह के ईश्वरत्व की इस अवधारणा को उठाना चाहता हूँ। और यहाँ मैं जिस विषय को उठाना चाहता हूँ, वह है उनके नाम की यह धारणा, उनका नाम इम्मानुएल है। अब, आप में से अधिकांश लोग अंत में इस "एल" को पहचानते हैं। "एल" का अर्थ है ईश्वर। फिर "इम्मानु" का अर्थ है "हमारे साथ।" तो, ईश्वर - "एल हमारे साथ है।" यह एक सुंदर - यह एक अविश्वसनीय, सुंदर नाम है - यह यीशु का नाम है, "और वह अपने लोगों को उनके पाप से बचाएगा, और उसे इम्मानुएल कहा जाएगा, जिसका अर्थ है 'हमारे साथ ईश्वर।'" मैथ्यू अध्याय 18, जब वह चर्च और चर्च अनुशासन के संदर्भ के बारे में बात कर रहा है, तो वह कहता है "जहाँ दो या तीन इकट्ठे होते हैं, वहाँ मैं बीच में हूँ। जहाँ दो या तीन इकट्ठे होते हैं, वहाँ मैं बीच में हूँ।" तो ईश्वर, अपने इम्मानुएल के संदर्भ में, हमारे साथ ईश्वर। फिर यही बात महान

आयोग में पाई जाती है। इस तरह पुस्तक समाप्त होती है। यह दिलचस्प है, मैथ्यू की पुस्तक इस नाम इम्मानुएल से शुरू होती है, परमेश्वर हमारे साथ और यीशु का प्रारंभिक नामकरण, और पुस्तक मैथ्यू अध्याय 28, श्लोक 18 से 20 में महान आयोग के साथ समाप्त होती है। मैथ्यू इस तरह से अपनी पुस्तक का समापन करता है: "यीशु आया और अपने शिष्यों से कहा, 'मुझे स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार दिया गया है। इसलिए, जाओ और शिष्य बनाओ,' आप देखते हैं कि शिष्यत्व का विषय कितना महत्वपूर्ण है, 'जाओ और सभी देशों के लोगों को शिष्य बनाओ, उन्हें पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम पर बपतिस्मा दो। इन नए शिष्यों को उन सभी आज्ञाओं का पालन करना सिखाओ जो मैंने तुम्हें दी हैं।'" और फिर वह इस तरह से निष्कर्ष निकालता है: "और इस बात का यकीन रखो, मैं हमेशा तुम्हारे साथ हूँ, यहां तक कि दुनिया के अंत तक भी।" "मैं हमेशा तुम्हारे साथ हूँ।" इम्मानुएल, परमेश्वर हमारे साथ। और इसलिए, आपको इस नाम, इम्मानुएल, से पुस्तक के आरंभ में, पुस्तक के मध्य में, और पुस्तक के अंत में ये महान कथन मिलते हैं, "मैं तुम्हारे साथ हूँ" जो सुंदर है क्योंकि वह अपने शिष्यों को कुछ बहुत कठिन काम करने के लिए कह रहा है, लेकिन वह उनके साथ है।

प्रश्न: पीटर पानी पर चलते हुए [60:05-65:24]

[G = संयुक्त लघु वीडियो: QS; 60:05-74:24]

मसीह का राजत्व

अब, पीटर का पानी पर चलना एक दिलचस्प बात है। मैं बस आपको एक नया विचार बताना चाहता हूँ। मैं अय्यूब की किताब पढ़ रहा था और यह मुझे बहुत प्रभावित करती है, और मैं इसे आपके विचार के लिए एक विचार के रूप में प्रस्तावित करना चाहता हूँ। मैं यह नहीं कह रहा हूँ कि यह सुसमाचार है, - मैंने किसी को ऐसा कहते नहीं सुना है, इसलिए मैं बस - जब भी मैं खुद कुछ खोजता हूँ, तो मैं हमेशा इस पर सवाल उठाता हूँ, कि क्या यह वास्तव में वैध है, लेकिन मैं बस चाहता हूँ कि आप इस बारे में सोचें। यह यीशु का पानी पर चलना है। क्या आपको अध्याय 14 याद है? आपने यीशु को पानी पर चलते हुए देखा है। तब पीटर कहता है, "यदि यह वास्तव में आप हैं, यीशु, तो मुझे आपके साथ नाव से बाहर आने दें।" पीटर नाव से बाहर निकलता है और वह कुछ

कदम चलता है, वह लहरों को देखता है, वह घबरा जाता है और पानी में गिर जाता है, फिर यीशु उसे बाहर निकालते हैं, और, जब यीशु नाव में चढ़ता है, तो शिष्य क्या निष्कर्ष निकालते हैं? वे निष्कर्ष निकालते हैं "आप ईश्वर के पुत्र हैं।" यीशु पानी पर चलते हैं, और वे निष्कर्ष निकालते हैं कि वह ईश्वर हैं। अब, यह कैसे काम करता है? खैर, मुझे ऐसा लगता है - और वास्तव में मैं अय्यूब की पुस्तक में था, और मैंने अय्यूब की पुस्तक में यह पढ़ा, और यह बहुत ही रोचक है। वह पानी पर चलता है, और उनका निष्कर्ष है "तुम ईश्वर के पुत्र हो"। वे पानी पर चलने से लेकर ईश्वर तक कैसे पहुँचते हैं? अब इसे देखें। पुराने नियम में, भजन 68 और अन्य स्थानों पर, ईश्वर को "बादलों के सवार" के रूप में चित्रित किया गया है, और मुझे लगता है कि यह एक तरह से मजाक है और बाल की पूजा को नीचा दिखाने जैसा है क्योंकि बाल ही वह था जो कनान के धार्मिक लोगों में बादलों पर सवार था। ईश्वर कहते हैं, "नहीं, नहीं। मैं ही बादलों पर सवार हूँ," यानी, "मैं ही बारिश लाता हूँ। यह बाल नहीं है जो बारिश करता है, मैं ही बारिश लाता हूँ, बादलों पर सवार।" अय्यूब में, यह कहा गया है, अय्यूब अध्याय 9, श्लोक 8: "वह अकेला ही आकाश को फैलाता है।" आकाश को कौन फैलाता है? "वह अकेला ही आकाश को फैलाता है।" यह परमेश्वर के बारे में बात कर रहा है। "वह वही है जो आकाश को फैलाता है।" और वह और क्या करता है? "... और समुद्र की लहरों पर चलता है।" "वह आकाश को फैलाता है और समुद्र की लहरों पर चलता है।" तो मुझे ऐसा लगता है कि - वे यीशु को क्या करते हुए देखते हैं? वे यीशु को समुद्र की लहरों पर चलते हुए देखते हैं, और वे निष्कर्ष निकालते हैं, "समुद्र की लहरों पर चलने वाला एकमात्र व्यक्ति कौन है? यही परमेश्वर करता है। परमेश्वर आकाश को फैलाता है और वह समुद्र की लहरों पर चलता है।"

अब आपको यहूदियों के बारे में थोड़ा समझना होगा - यहूदी पहाड़ी लोग थे। जब आप फिलिस्तीन की भूमि में प्रवेश करते हैं, तो आपको गैलिली सागर, जॉर्डन नदी, मृत सागर आपके दाईं ओर या पूर्व में मिलता है। फिर यह यरूशलेम क्षेत्र में लगभग 2700 फीट ऊपर एक पहाड़ में आता है, मृत सागर समुद्र तल से लगभग 1300 फीट नीचे है, इसलिए आपको वहां लगभग 3 - 4000 फीट की ऊँचाई मिलती है, और फिर भूमध्य सागर तक नीचे जाती है। तो आपको भूमध्य सागर मिल गया जो ऊपर आ रहा है - इसलिए वे आम तौर पर पहाड़ी लोग हैं। यहूदी समुद्र के बारे

में बहुत अच्छा नहीं जानते। जब वे समुद्र के बारे में बात करते हैं - भूमध्य सागर, इस तरह की चीजें - वे आम तौर पर महान महासागर के बारे में अराजकता का प्रतिनिधित्व करते हैं। इसलिए जब समुद्र उग्र होता है, तो उनके लिए यह अराजकता है। वे समुद्री लोग नहीं हैं; उन्हें पहाड़, सुरक्षा, आप जानते हैं, स्थिरता - पहाड़ पसंद हैं। समुद्र अराजक हैं और हमेशा बदलते रहते हैं और झाग बनाते रहते हैं और इसलिए समुद्र कई बार अराजकता का प्रतिनिधित्व करते हैं। तो आपको जो मिलता है वह है भगवान पानी पर चलते हैं और जीसस समुद्र को शांत करते हैं। अराजकता उनके वचन से शांत होती है। अराजकता उन पर हावी नहीं होती, वे इसमें शामिल नहीं होते। वे इसे शांत करते हैं। वे समुद्र की लहरों पर चलते हैं। तो आपको जीसस मिलते हैं और--बस भगवान के रूप में अपनी शक्ति दिखाते हैं। यह भी दिलचस्प है कि पीटर नाव से बाहर निकलता है और उस पर चलता है, और इस साल, मुझे लगता है, कक्षा में कुछ छात्र सवाल पूछ रहे थे, लेकिन आपको जीसस पानी पर चलते हुए और फिर पीटर पानी पर चलते हुए दिखाई देते हैं। इसका क्या महत्व है? और मुझे आश्चर्य है कि क्या यह स्वर्ग के राज्य की एक छोटी सी झलक है। आपको जो मिलता है वह यह है कि न केवल जीसस, भगवान के रूप में, पानी पर चलते हैं, बल्कि फिर यहाँ आपको एक शिष्य, जीसस का अनुयायी भी पानी पर चलता हुआ दिखाई देता है। मुझे आश्चर्य है कि क्या यह दर्शाता है कि जैसे ही राज्य आएगा, किसी दिन हम पूरी पृथ्वी पर प्रभुत्व प्राप्त करेंगे, जैसा कि उत्पत्ति अध्याय 2 में बताया गया है, मनुष्य को पृथ्वी पर प्रभुत्व दिया गया था। किसी दिन ऐसा समय आएगा जब हम यीशु की तरह पानी पर चलेंगे, और पीटर, पीटर के साथ, आपको इसकी थोड़ी सी झलक मिलती है, यहाँ राज्य घटित हो रहा है। पीटर पानी पर चलता है। यह मानव जाति की नियति है क्योंकि हमारे पास पृथ्वी पर प्रभुत्व है। अब अराजकता का शासन नहीं होगा, बल्कि हम पानी पर चलेंगे। तो, यह शायद पीटर के साथ आने वाले राज्य का थोड़ा सा पूर्वाभास है। तो, बस कुछ विचार हैं, मैं उन्हें बहुत ज़ोर से नहीं कह रहा हूँ क्योंकि मेरे पास खुद इसके बारे में कुछ सवाल हैं, लेकिन यह दिलचस्प है। वे उसे पानी पर चलते हुए देखने के बाद निष्कर्ष निकालते हैं कि "तुम ईश्वर के पुत्र हो।"

आर. मसीह का राजत्व [65:24-69:06]

अब, आइए राजत्व और स्वर्ग के राज्य पर नज़र डालें। बहुत से लोगों ने कहा है, "राज्य किस बारे में है? राज्य वह है जहाँ राजा शासन करता है, और राजा यीशु मसीह है।" तो ये कुछ बातें हैं जो स्वर्ग के इस राज्य में मसीह के राजत्व की ओर इशारा करती हैं, जो मैथ्यू की पुस्तक में एक प्रमुख धार्मिक विषय है। वंशावली में - यदि यीशु मसीह एक राजा है, तो क्या राजा को वंशावली की आवश्यकता है? एक राजा को वंशावली की आवश्यकता होती है - एक सामान्य व्यक्ति, हाँ, कुछ हद तक - लेकिन, एक राजा को वंशावली की आवश्यकता होती है। वैसे, यीशु की वंशावली किससे जुड़ी है? डेव मैथ्यूसन ने इसे उठाया अगर आप उनके व्याख्यानों को सुनें - मैथ्यू की पहली आयत पर एक शानदार तरीके से। मैथ्यू की पुस्तक में: "यीशु मसीह, दाऊद का पुत्र।" "यीशु मसीह, दाऊद का पुत्र।" और इसलिए वंशावली दाऊद के पुत्र के रूप में यीशु के संबंध को दिखा रही है, जो दाऊद की वाचा को पूरा करने जा रहा है और आएगा - 2 शमूएल अध्याय 7 से - कि दाऊद का सिंहासन इस्राएल पर "सदैव और सदा के लिए" शासन करने जा रहा है। यीशु मसीह अब दाऊद के उस महान पुत्र के रूप में आ रहे हैं जो दाऊद से भी महान है, उसका पुत्र जो "सदैव शासन करेगा।" इसलिए उनकी वंशावली दाऊद तक जाती है और यह अब्राहम और अब्राहम की वाचा को पूरा करने और फैलने तक भी जाती है - सभी राष्ट्रों के लिए एक आशीर्वाद। यीशु मसीह, पुराने नियम में, जब हमने शमूएल को देखा, आपको याद है कि जब कोई राजा बनाया जाता है - शमूएल ने एक राजा बनाया है - तो एक नए राजा को सबसे पहले क्या करना होता है? यही बात न्यायियों में भी पाई जाती है। जब इस्राएल में एक न्यायाधीश बनाया जाता है, तो न्यायाधीश सबसे पहले क्या करता है? इस्राएल का एक नया राजा सबसे पहले क्या करता है? इस्राएल का एक राजा सबसे पहले क्या करता है, वह बाहर जाता है और एक सैन्य जीत हासिल करता है। वह अभिषिक्त राजा है, सबसे पहले वह एक सैन्य जीत हासिल करता है। जबेश ग्लीआद, शाऊल का मामला। क्या किसी को डेविड याद है - 1 शमूएल 16 में डेविड का अभिषेक किया जाता है, डेविड को राजा के रूप में अभिषिक्त किया जाता है, और फिर अध्याय 17, अगला अध्याय - 1 शमूएल 16 में डेविड का अभिषेक किया जाता है, और अगले अध्याय में, डेविड बाहर जाता है और गोलियत से लड़ता है। तो, राजा का अभिषेक किया जाता है, और फिर राजा को एक बड़ी जीत मिलती है, और यही डेविड के राजत्व के संबंध में और शाब्दिक रूप से गोलियत की कहानी की भूमिका है।

अब, यीशु कौन है? यीशु अब राजा है, वह दाऊद का पुत्र है। यीशु क्या करता है? यीशु जंगल में जाता है। उसे जॉन बैपटिस्ट द्वारा बपतिस्मा दिया जाता है - एक अर्थ में यह उसका अभिषेक है। उसे अध्याय 3 में जॉन बैपटिस्ट द्वारा बपतिस्मा दिया जाता है, और फिर अध्याय 4 में, यीशु जंगल में जाता है और एक अर्थ में इस्राएल को फिर से नाटकीय रूप देता है। जबकि इस्राएल जंगल में था और उन्होंने इसे गड़बड़ कर दिया, यीशु अब चालीस दिन और चालीस रातों के लिए जंगल में जाएगा, और यीशु सच्चा इस्राएल बन जाएगा, और जहाँ इस्राएल विफल हो गया। यीशु अब शैतान द्वारा लुभाया जाएगा और वह वहाँ सफल होगा जहाँ इस्राएल विफल हो गया था। यह शैतान पर उसकी जीत है। जब यीशु जंगल में जाता है, तो उसे अध्याय 3 में अभी-अभी अभिषेक किया गया है - अध्याय 4 में वह जंगल में जाता है और शैतान को हरा देता है। "इन पत्थरों को रोटी बनाओ। मंदिर के शिखर से नीचे कूद जाओ और परमेश्वर के स्वर्गदूत तुम्हें उठा लेंगे।" "अपने परमेश्वर यहोवा की परीक्षा मत लो," यीशु ने कहा। उसे ऊँचे पहाड़ पर ले जाता है और उसे दुनिया के सभी राज्य दिखाता है, "झुककर मेरी आराधना करो।" यीशु कहते हैं, "तुम केवल परमेश्वर की आराधना करो।" फिर यीशु ने वास्तव में व्यवस्थाविवरण की पुस्तक के अध्याय 4 से लेकर अध्याय 11 तक के उद्धरण देते हुए, तीनों बार शैतान का खंडन किया। शैतान का खंडन करने के लिए यीशु ने पवित्रशास्त्र का उपयोग किया। शैतान और मसीह के बीच बहुत ही दिलचस्प लड़ाई हुई।

सब्त के दिन का प्रभु और दाऊद का पुत्र [69:06-74:24]

अब, सब्त के प्रभु। क्या आपको यीशु याद है - वे उससे पूछ रहे थे कि क्या वह इस सूखे हाथ वाले व्यक्ति को ठीक कर सकता है, और यीशु ने कहा, क्या? "सब्त मनुष्य के लिए बनाया गया है, मनुष्य सब्त के लिए नहीं," और मनुष्य का पुत्र सब्त का प्रभु है, और सब्त का प्रभु कौन है? परमेश्वर/यीशु। उसे मत्ती की पुस्तक में नौ बार "दाऊद का पुत्र" कहा गया है। नौ बार "दाऊद का पुत्र", जो फिर से यीशु को राजा के रूप में दिखाता है, और वैसे, चित्र शास्त्र में, आप देख सकते हैं कि मैंने यीशु को हम्पी डम्पी के रूप में चित्रित किया है जिसके सिर पर एक मुकुट है क्योंकि मत्ती की पुस्तक में यीशु को राजा के रूप में चित्रित किया गया है। यह "दाऊद का पुत्र" शीर्षक नौ बार आता है। अन्य सुसमाचार लेखकों ने इसका उल्लेख केवल तीन बार किया है, इसलिए मत्ती में अन्य

सुसमाचारों, समकालिक सुसमाचारों की तुलना में तीन गुना अधिक संदर्भ हैं, जिसमें "दाऊद का पुत्र" है। और फिर, हम बाद में इस पर वापस आएं, लेकिन क्या आपने यहाँ यह डीवीडी देखी है? यह चौदह है।

मुझे लगता है कि मसीह के राजत्व का एक और पहलू वंशावली में पाया जाता है। मैं अभी इस पर थोड़ा विस्तार से बात करूँगा, हम इस पर थोड़ी देर बाद वापस आएं। मैथ्यू अध्याय 1 में यीशु मसीह की वंशावली में, आपको यह दिलचस्प कथन मिलता है जहाँ वह विभिन्न राजाओं की वंशावली के माध्यम से जा रहा है, और ऐसा करते हुए, वह वंशावली का समापन करता है और वह इस्राएल के सभी राजाओं के माध्यम से जाता है। वह अब्राहम से इसहाक के पिता के रूप में शुरू करता है, इसहाक याकूब के पिता के रूप में, याकूब यहूदा और उसके भाइयों के पिता के रूप में, और फिर वह विभिन्न चीजों के माध्यम से नीचे जाता है। दाऊद सुलैमान का पिता था, सुलैमान रहूबियाम का पिता था, रहूबियाम, अबिय्याह का पिता, नीचे चला गया और बेबीलोन में निर्वासित हो गया। वंशावली के अंत में यह कहा गया है: "इस प्रकार, अब्राहम से दाऊद तक कुल चौदह पीढ़ियाँ हैं," अब्राहम से दाऊद तक - चौदह पीढ़ियाँ, "और दाऊद से बेबीलोन में निर्वासित होने तक, चौदह पीढ़ियाँ।" अब्राहम से लेकर दाऊद तक - चौदह थे, दाऊद से लेकर निर्वासन तक - 586 ईसा पूर्व जब बेबीलोन के लोगों ने पहला मंदिर नष्ट किया था - चौदह पीढ़ियाँ। "और फिर बेबीलोन के निर्वासन से लेकर मसीह के समय तक चौदह पीढ़ियाँ।" वह संख्या चौदह, चौदह और चौदह आती है और आप कहते हैं, "ठीक है, हम वास्तव में जानते हैं कि यह वास्तव में सही नहीं है, कि वास्तव में यदि आप मैथ्यू अध्याय 1, श्लोक 8 पर जाएँ और आप इसकी तुलना 1 इतिहास 3:11 से करें तो आप कहेंगे, 'एक मिनट रुकिए, मैथ्यू, आपने तीन राजाओं के नाम छोड़ दिए।' तीन राजाओं को छोड़ दिया गया है। वह तीन राजाओं को क्यों छोड़ देता है? वह इसे चौदह, चौदह और चौदह तक ले जाने की कोशिश कर रहा है, और इसलिए वह तीन राजाओं को छोड़ देता है। हम 1 इतिहास 3:11 से जानते हैं कि तीन राजा थे जिन्हें उसने छोड़ दिया। हम उन राजाओं के नाम जानते हैं - ठीक है, वे राजा हैं, इसलिए हम इस्राएल और यहूदा के सभी राजाओं के नाम जानते हैं लेकिन वह तीन

को छोड़ देता है। वह ऐसा क्यों करता है? वह इसे चौदह नंबर पर लाने की कोशिश कर रहा है। चौदह नंबर इतना महत्वपूर्ण क्यों है?

खैर, अमेरिकी संस्कृति में वापस - मैं अब दीवार पर लगी एक घड़ी को देख रहा हूँ - जब आप संख्याएँ देखते हैं, तो क्या, यह बारह बजे है, हम उपयोग करते हैं - हमारी संख्या प्रणाली और हमारी वर्णमाला प्रणाली दो अलग-अलग चीजें हैं। हमारे पास A, B, C, D हैं - ये हमारे अक्षर हैं और यही हम शब्दों में लिखते हैं। आपके पास 1, 2, 3, 4 हैं - यही हमारी संख्या प्रणाली है। हमारे पास एक अलग संख्या प्रणाली है - अरबी संख्याएँ। हमारे अक्षर हमारी संख्याओं से अलग हैं, और यह बहुत ही सुविधाजनक है, फिर, संख्याओं को अलग करने में सक्षम होने के लिए, जो आप सामान्य रूप से लिखते हैं। यहूदी समय में, पहली शताब्दी में उन्होंने गेमाट्रिया नामक एक सिद्धांत का उपयोग किया - और इस पर कुछ बहस है, लेकिन मैं बस इस विचार को समझना चाहता हूँ - जहाँ संख्याएँ और अक्षर एक ही चीज़ थे। तो, मूल रूप से, A 1 होगा, B 2 होगा, C 3 होगा, D 4 होगा, और इसलिए D, वास्तव में, हिब्रू में 4 है, V 6 है, और D 4 है। और आप कहते हैं कि DVD बराबर है - और यदि आप 4, 6, 4 करते हैं, तो यह ठीक चौदह हो जाता है। DVD - अब आप कहते हैं, "ठीक है, यह बाइबिल में DVD के अस्तित्व से दो हजार साल पहले की भविष्यवाणी है। मैथ्यू हमें DVD के बारे में बता रहा है।" हाँ, वह हमें DVD के बारे में बता रहा है, लेकिन आपको यह भी याद है कि स्वर बाद में जोड़े गए थे, कि शुरू में, हिब्रू भाषा केवल सख्ती से व्यंजन थी, और मैं चाहता हूँ कि आप इसे देखें। DVD - वह कौन है? स्वरों को डालें - वह कौन है? डेविड। डेविड, डेविड। और इसलिए, मैथ्यू जो कर रहा है वह मैथ्यू की वंशावली का उपयोग करके कह रहा है कि चौदह पीढ़ियाँ - यीशु मसीह डेविड का पुत्र है। चौदह पीढ़ियाँ - यीशु मसीह डेविड का पुत्र है। वह इसका इस्तेमाल करता है, और संभवतः इस तरह से, और इसीलिए वह चौदह, चौदह और चौदह का इस्तेमाल यह कहने के लिए कर रहा है, "यीशु मसीह दाऊद का पुत्र है, इस्राएल का राजा, जो हमेशा-हमेशा के लिए राज करने वाला है।" तो ये कुछ दिलचस्प बातें हैं, कि कैसे मैथ्यू मसीह के धर्मशास्त्र को चित्रित कर रहा है। यहाँ मसीह को राजा के रूप में चित्रित किया जा रहा है।

T. मत्ती और मरकुस में स्वर्ग का राज्य [74:24-77:57]

[H = संयुक्त लघु वीडियो: टीवी; 74:24-83:17]

स्वर्ग के राज्य

अब, स्वर्ग के राज्य के बारे में बात करते हैं। मैथ्यू में इस वाक्यांश, "स्वर्ग का राज्य" की प्रमुखता है। और अब मैं इस पर थोड़ा काम करूँगा। जब यीशु जॉन के पास जा रहे थे - जॉन प्रचार कर रहे थे - जॉन क्या प्रचार कर रहे थे? जॉन प्रचार कर रहे थे, "मन फिराओ, क्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट है।" मैथ्यू अध्याय 3, पद 1। "मन फिराओ, क्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट है।" यह जॉन बैपटिस्ट का संदेश है। अब, और क्या? आनंद में - आप लोगों ने डेविड टर्नर का एक लेख पढ़ा, जो मेरे एक मित्र हैं, जिनके साथ मैं वर्षों पहले पढ़ाता था। डेविड टर्नर ने आनंद पर *क्रिसवेल थियोलॉजिकल रिव्यू में एक बेहतरीन लेख लिखा था*। डेविड ने वहाँ लिखा है कि आनंद की शुरुआत "धन्य हैं वे जो मन में दीन हैं, क्योंकि स्वर्ग का राज्य उनका है।" तो पहला आनंद, "धन्य हैं वे जो मन में दीन हैं, क्योंकि स्वर्ग का राज्य उनका है।" और अगर आप आशीर्वाद को समाप्त करते हैं, तो श्लोक 10 में नीचे - यह कहता है, "धन्य हो तुम जब लोग तुम्हें सताएँगे, क्योंकि स्वर्ग का राज्य तुम्हारा है।" और इसलिए, अध्याय 5, श्लोक 10 में जब यह आशीर्वाद को समाप्त करता है - आशीर्वाद स्वर्ग के राज्य के इस वादे के साथ शुरू और खत्म होता है। तो यही आशीर्वाद है। इसे "इंक्लूसियो" कहा जाता है? यह किताब के अंत की तरह है। आशीर्वाद स्वर्ग के राज्य के इस वादे के साथ शुरू और खत्म होते हैं। यह एक तरह की साफ-सुथरी बात है।

अब, 32 बार - मैथ्यू इसका उपयोग किया गया है - यह वाक्यांश, "स्वर्ग का राज्य", मैथ्यू की पुस्तक में 32, 33 बार उपयोग किया गया है। तो यह एक प्रमुख विषय है। मैथ्यू के 28 अध्याय - उन सभी अध्यायों में इसका उल्लेख किया गया है। तो मैथ्यू में 32 बार, "स्वर्ग का राज्य" का उल्लेख किया गया है। अब, आप जो नोटिस करते हैं वह यह है कि यदि आप अन्य सुसमाचारों पर जाते हैं, तो क्या यह ईश्वर का राज्य है या यह स्वर्ग का राज्य है? आप देखेंगे कि मैथ्यू स्वर्ग के राज्य का उल्लेख करता रहता है। और अन्य सुसमाचार लेखक ईश्वर के राज्य का उपयोग करते हैं। मैं आपको इसका एक उदाहरण दिखाता हूँ, और, फिर से, मेरी कार्यप्रणाली है - मैं क्या कर रहा हूँ? मैं

मैथ्यू की पुस्तक की तुलना, मान लीजिए, मार्क की पुस्तक से कर रहा हूँ, और मैं समानांतर अंश डालने जा रहा हूँ। ये समानांतर अंश हैं, और फिर देखें कि शब्द कैसे बदल जाते हैं, और फिर कहें, "मैथ्यू ऐसा क्यों करेगा? उसने शब्दों को क्यों बदला?" तो यह कहता है, "स्वर्ग के राज्य के रहस्यों का ज्ञान तुम्हें दिया गया है," मैथ्यू 13, राज्य के दृष्टांतों पर अध्याय। "स्वर्ग के राज्य के रहस्यों का ज्ञान तुम्हें दिया गया है।" खैर, यह बहुत दिलचस्प है, अगर आप मार्क की पुस्तक में जाते हैं, अध्याय 4, श्लोक 11 में, जो मार्क के राज्य के दृष्टांत हैं, और आपको वहां क्या मिलता है, "परमेश्वर के राज्य का रहस्य तुम्हें दिया गया है।" और इसलिए यहाँ आपको मार्क में "परमेश्वर के राज्य का रहस्य" मिला है, यहाँ मैथ्यू में आपको "स्वर्ग के राज्य का रहस्य" मिला है। तो ऐसा लगता है कि मैथ्यू ने अपना रास्ता बदल दिया है - ज्यादातर लोग मानते हैं कि मार्क को पहले लिखा गया था और मैथ्यू थोड़ा सा मार्क पर निर्भर है।

अब मैथ्यू वास्तव में यीशु का शिष्य था, इसलिए उसने वास्तव में यीशु के शब्दों को सुना, और आप कहते हैं, "ठीक है, यहाँ एक मिनट रुको। वह इस तरह से शब्दों को कैसे बदल सकता है?" नंबर एक, आप भाषाओं के बीच जा रहे हैं, आपके पास उद्देश्य हैं, क्या यह संभव है कि यीशु ने इन दृष्टांतों का प्रचार किया और कई बार उनके बारे में बात की।

यू. मतभेदों को सुलझाना [77:57-80:47]

गॉर्डन कॉलेज में हमारे पास डॉ. ग्रीम बर्ड नाम का एक व्यक्ति है, और उसने जैज़ के इस विचार को पेश किया है, और मैं चाहता हूँ कि आप इसके बारे में सोचें, और चलिए शायद यहाँ एक पल के लिए इस बारे में थोड़ा सोचें। डॉ. बर्ड, जब वह बजाते हैं, तो मान लीजिए कि वह "जिंगल बेल्स" बजाते हैं, और इसलिए - यह वास्तव में उनके लिए बहुत भद्दा है। वह एक कॉन्सर्ट पियानोवादक हो सकते हैं। तो मान लीजिए कि वह "जिंगल बेल्स" बजा रहे हैं। वह इसे शास्त्रीय रूप में बजा सकते हैं। तो वह पियानो पर बैठते हैं - चलो बस "जॉय टू द वर्ल्ड" बजाते हैं शायद यह बेहतर होगा - तो वह "जॉय टू द वर्ल्ड" पर बैठते हैं और वह पियानो पर शास्त्रीय तरीके से "जॉय टू द वर्ल्ड" बजाते हैं। वह इसे बीथोवेन या मोजार्ट की तरह बजाते हैं, और वह इसे इन सभी छोटी चीज़ों के साथ बजाते हैं, और इसलिए "जॉय टू द वर्ल्ड" शास्त्रीय लगता है। फिर वह उसी गीत को

लेता है, "जॉय टू द वर्ल्ड, द लॉर्ड हैज कम," और अब वह इसे एक गॉस्पेल गीत के रूप में बजाता है। और इसलिए वह इसे बजाता है, आप जानते हैं "जॉय टू द वर्ल्ड..." और एक गॉस्पेल गीत के रूप में, जैसे कि यह एक गॉस्पेल चर्च में बजाया जाता है जब लोग "जॉय टू द वर्ल्ड" गा रहे होते हैं। आप पाते हैं कि वह इसे शास्त्रीय रूप से बजाता है, फिर वह बदल जाता है। यह वही गीत है "जॉय टू द वर्ल्ड" और आप इसे शास्त्रीय रूप में पहचानते हैं और जब वह इसे गॉस्पेल में बजाता है तो आप इसे पहचानते हैं। लेकिन आप कहते हैं, "एक मिनट रुकिए, लेकिन यह अलग है, यह जैज़ जैसा है।" यह वही गीत है, लेकिन उसने इसे अलग तरह से जैज़ किया है क्योंकि अगर आप शास्त्रीय संदर्भ में होते, तो वह इसे उसी तरह बजाता। यदि आप किसी गॉस्पेल चर्च गीत में होते, तो वह इसे इस तरह बजाता, और फिर वह "जॉय टू द वर्ल्ड" का ब्लूग्रास संस्करण करता, और इसलिए वह इसके साथ जैज़ की तरह की चीज़ करता, और यह पूरी तरह से अलग लगता है लेकिन फिर भी यह वही है, और आप इसे "जॉय टू द वर्ल्ड" के रूप में पहचानते हैं। अब वे तीनों तरीके जिनसे वह इसे बजाता है, वे सभी "जॉय टू द वर्ल्ड" हैं, लेकिन उन्हें अलग-अलग तरीके से बजाया जाता है और क्योंकि अलग-अलग दर्शक होते हैं। तो यह वही है, लेकिन फिर भी यह अलग है।

कोई भी जिसने प्रचार किया है - मुझे लगता है कि मैंने आप लोगों को यह पहले भी बताया है, जब मैं टेनेसी में था, तब मैं सर्किट-राइडिंग प्रचारक था, टेनेसी में पढ़ाता था, और मैं पाँच अलग-अलग चर्चों में प्रचार करता था। मैं एक चर्च से दूसरे चर्च में जाता था और एक उपदेश बनाता था और फिर उसे एक बार, दो बार प्रचार करता था - दूसरी बार, मेरी पत्नी हमेशा कहती थी कि पहली बार बहुत खराब था, दूसरी बार यह बहुत बेहतर हो गया। तीसरी बार, उसने कहा, "वह तुम्हारा सबसे अच्छा था," और फिर जब मैं चौथे और पाँचवें चर्च में पहुँचा, तो उसने कहा, "पाँचवें चर्च तक," उसने कहा, "मैं बता सकती हूँ कि तुम अपने उपदेश से ऊब चुके हो।" तो क्या होता था - और हर बार जब मैं प्रचार करता था, तो श्रोताओं के आधार पर, मैं उसी उपदेश को प्रचार करने के लिए जिन शब्दों का उपयोग करता था, वे थोड़े अलग होते थे। मैं जो सुझाव दे रहा हूँ वह यह है कि यीशु कई बार प्रचार करने जा रहे हैं, और इसलिए आपको यह कहते समय बहुत सावधान रहना होगा, "यह बिल्कुल वही शब्द होने चाहिए।" मैथ्यू अलग-अलग श्रोताओं को लिख रहा है, और

अलग-अलग श्रोता इसे अलग-अलग तरीकों से सुनेंगे। और इसलिए यहाँ, आपको स्वर्ग के राज्य और परमेश्वर के राज्य के बीच यह स्विच मिलता है।

V. स्वर्ग ईश्वर का एक पर्यायवाची शब्द है [80:47-83:17]

यह संभव है - और मैंने यह स्पष्टीकरण सुना है और मैं इससे सहमत हूँ - मैथ्यू स्वर्ग के राज्य का उपयोग करता है क्योंकि वह यहूदी लोगों को लिख रहा है, और इसलिए, यहूदी लोग "भगवान" कहना पसंद नहीं करते हैं और आप इसे उनके नाम "याहवे" या "जेहोवा" के उच्चारण में देख सकते हैं, वे इसका उच्चारण नहीं करते हैं, वे *एडोनाई कहेंगे* या वे *हाशेम* - "नाम" कहेंगे, और हर कोई "नाम" जानता है, जब वे *हाशेम कहते हैं* - उनका मतलब भगवान होता है। लेकिन वे "भगवान" शब्द नहीं कहते हैं क्योंकि वे ईशनिंदा नहीं करना चाहते हैं, और मैं वास्तव में भगवान के नाम के प्रति उनके सम्मान का सम्मान करता हूँ। जब मैं इस OMG सामान को घटित होते देखता हूँ तो मुझे हमारी संस्कृति में कुछ हद तक घृणा होती है। मैं बस यही देखता हूँ, किसी का पैर ठोकर खा जाता है और अचानक से "हे भगवान" कहता है, और मैं बस यही कहता हूँ, "हम इसे किस तरह से संदर्भित कर रहे हैं" - हमें कभी भी ऐसा कहने की अनुमति नहीं है - एक शिक्षक कक्षा के सामने उठ सकता है और बस कुछ गिरा सकता है और खुद को चोट पहुँचा सकता है और वह कह सकता है "हे भगवान", लेकिन अगर वही शिक्षक इस तरह से जाता है और कहता है "हे भगवान," ACLU उसके पीछे है और उस पर मुकदमा चलेगा और वह अपनी नौकरी खो देगा। इसलिए बस इसके साथ बहुत सावधान रहें, और मैं इसके लिए यहूदियों का सम्मान करता हूँ। अब मैथ्यू फिर, "स्वर्ग का राज्य" कहता है - जैसे मेरी माँ कहा करती थी। मेरी माँ कहती थी, "भगवान मेरी मदद करो" कहने के बजाय, मेरी माँ कहती थी "स्वर्ग मेरी मदद करो। स्वर्ग मेरी मदद करो।" जब उसने कहा "स्वर्ग मेरी मदद करो" तो उसका क्या मतलब था? उसका मतलब था "भगवान मेरी मदद करो" लेकिन वह कहती थी "स्वर्ग मेरी मदद करो।" इसलिए स्वर्ग का उपयोग एक परिक्रमण के रूप में किया जाता है, या एक लक्षणालंकार के रूप में कहा जा सकता है - स्वर्ग का उपयोग ईश्वर को संदर्भित करने के लिए एक लक्षणालंकार या परिक्रमण के रूप में किया जाता है। इसलिए मुझे लगता है कि मैथ्यू ऐसा करता है - अपने यहूदी दर्शकों के सम्मान में वह इसे "स्वर्ग के राज्य" में

बदल देता है, और ऐसा लगता है कि यह उसके यहूदी दर्शकों के कारण उसकी बात है। क्या आप अपने संदेश को दर्शकों के अनुसार ढालते हैं? बेशक आप ऐसा करते हैं। इसलिए, मैथ्यू "ईश्वर के राज्य" के बजाय "स्वर्ग के राज्य" का उपयोग करता है।

ठीक है, स्वर्ग का राज्य। अब, मुझे लगता है कि मैं यहाँ थोड़ा ब्रेक लूँगा। हम काफी समय से जा रहे हैं। तो चलिए थोड़ा आराम करते हैं, और जब हम वापस आएँगे तो स्वर्ग के राज्य के बारे में बात करेंगे।

सारा वुडबरी द्वारा लिखित

बेन बोव्डन द्वारा संपादित

टेड हिल्डेब्रांट द्वारा संपादित रफ